कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2026-28 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

# कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 2 मार्च 2026 वर्ष-24 अंक- 26 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

**होली की हार्दिक शुभकामनाएं**

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभ चिंतकों को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- कृषक जगत परिवार

**छत्तीसगढ़ बजट 2026-27**

## राज्य में किसानों के लिए खजाने का द्वार खोला

### 3100 रु. धान का दाम और 5 एचपी तक मुफ्त बिजली

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए अपना 'संकल्प' बजट पेश कर दिया है। वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी द्वारा पेश किया गया 1.72 लाख करोड़ रुपये का यह बजट पूरी तरह से 'गाँव, गरीब और किसान' पर केंद्रित है। इस बजट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि सरकार ने न केवल धान के दाम को स्थिर रखा है, बल्कि खेती-किसानी को आधुनिक और विविधतापूर्ण बनाने के लिए खजाने का द्वार खोल दिया है।

**कृषक उन्नति योजना**

सरकार ने कृषक उन्नति योजना के लिए 10,000 करोड़ रुपये का भारी-भरकम प्रावधान किया है। छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए सबसे बड़ी खबर यह है कि सरकार 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान की खरीदी जारी रखेगी। लेकिन इस बार का बजट सिर्फ धान तक सीमित नहीं है।

राज्य में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए योजना का दायरा बढ़ा दिया गया है।

**बजट आवंटन** (करोड़ रुपये में)

| योजना/विभाग | राशि |
|---|---|
| पंचायत एवं ग्रामीण विकास | 16,560 |
| खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति | 12,820 |
| कृषक उन्नति योजना | 10,000 |
| मुख्यमंत्री खाद्यान्न सहायता | 6,500 |
| मार्कफेड (धान उपार्जन) | 6,000 |
| मुफ्त बिजली (कृषि पंप) | 5,500 |
| पीएम आवास योजना (ग्रामीण) | 4,000 |
| पीएम फसल बीमा योजना | 820 |

(शेष पृष्ठ 3 पर)

**पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026**

## किसानों के बकाया भुगतान पर 12% ब्याज

### श्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि सुधारों का रोडमैप रखा

**नई दिल्ली (कृषक जगत)।** केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) में पूसा कृषि विज्ञान मेले का उद्घाटन करते हुए लाइसेंस प्रक्रिया, सब्सिडी वितरण आदि से जुड़े कृषि सुधारों का रोडमैप प्रस्तुत किया।

आईसीएआर-आईएआरआई परिसर में आयोजित इस वार्षिक मेले में वैज्ञानिकों, प्रगतिशील किसानों, कृषि उद्यमियों और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पौधारोपण से हुआ। इस मौके पर कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट और आईएआरआई के निदेशक डॉ. सी. एच. श्रीनिवास राव सहित कई अधिकारी और किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सात किसानों को आईएआरआई कृषि अध्येता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

# ग्रीष्मकालीन बुवाई 2026 की शुरुआत सकारात्मक

## 20 फरवरी तक 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई

( निमिष गंगराड़े )

**नई दिल्ली ( कृषक जगत )। देश में ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई ने रफ्तार पकड़ ली है। 20 फरवरी 2026 तक कुल 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई हो चुकी है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह आंकड़ा 20.38 लाख हेक्टेयर था। इस प्रकार चालू वर्ष में 0.92 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। यह आंकड़े कृषि मंत्रालय द्वारा जारी किए गए हैं।**

वर्ष 2022-23 से 2024-25 के औसत के आधार पर ग्रीष्मकालीन फसलों का सामान्य क्षेत्र 75.37 लाख हेक्टेयर है। वर्ष 2025 में ग्रीष्मकालीन फसलों का अंतिम क्षेत्र 83.92 लाख हेक्टेयर रहा था, जो सामान्य क्षेत्र से अधिक था।

### धान की बुवाई स्थिर

धान की बुवाई 17.78 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हुई है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के बराबर है। धान का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 31.49 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 33.28 लाख हेक्टेयर रहा था। शुरुआती चरण में धान की बुवाई का स्थिर रहना संकेत देता है कि प्रमुख सिंचित क्षेत्रों में बुवाई सामान्य गति से चल रही है।

### दलहनों में बढ़ोतरी

दलहनों का कुल क्षेत्र 0.91 लाख हेक्टेयर रहा है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 0.76 लाख हेक्टेयर से 0.15 लाख हेक्टेयर अधिक है। मूंग की बुवाई 0.59 लाख हेक्टेयर में हुई है, जो पिछले वर्ष के 0.56 लाख हेक्टेयर से अधिक है। उड़द का क्षेत्र 0.25 लाख हेक्टेयर है, जबकि पिछले वर्ष यह 0.19 लाख हेक्टेयर था। अन्य दलहनों का क्षेत्र 0.07 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया है, जो पिछले वर्ष 0.01 लाख हेक्टेयर था।

दलहनों का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 23.40 लाख हेक्टेयर है और वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 27.07 लाख हेक्टेयर रहा था।

### श्री अन्न एवं मोटे अनाज में विस्तार

श्री अन्न एवं मोटे अनाज का कुल क्षेत्र 1.38 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 1.08 लाख हेक्टेयर से 0.30 लाख हेक्टेयर अधिक है। ज्वार का क्षेत्र 0.04 लाख हेक्टेयर है, जबकि पिछले वर्ष यह 0.03 लाख हेक्टेयर था। बाजरा 0.12 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष के 0.14 लाख हेक्टेयर से थोड़ा कम है। रागी का क्षेत्र 0.15 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष 0.02 लाख हेक्टेयर था। छोटे मिलेट्स का क्षेत्र 0.01 लाख हेक्टेयर है। मक्का 1.06 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष के 0.89 लाख हेक्टेयर से अधिक है।

इस श्रेणी का सामान्य क्षेत्र 12.08 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 14.06 लाख हेक्टेयर रहा था।

### तिलहनों में तेज वृद्धि

तिलहनों का कुल क्षेत्र 1.24 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 0.77 लाख हेक्टेयर से 0.46 लाख हेक्टेयर अधिक है। मूंगफली 1.04 लाख हेक्टेयर में बोई गई है, जो पिछले वर्ष के 0.60 लाख हेक्टेयर से काफी अधिक है। सूरजमुखी 0.07 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष 0.06 लाख हेक्टेयर था। तिल का क्षेत्र 0.12 लाख हेक्टेयर है, जो पिछले वर्ष के बराबर है। अन्य तिलहनों का क्षेत्र 0.01 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया है।

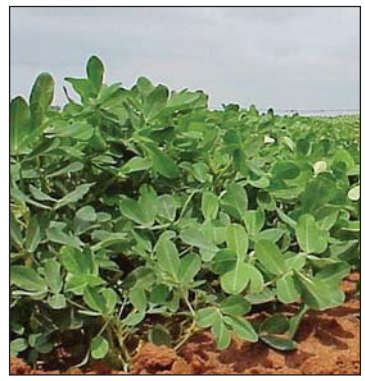

तिलहनों का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 8.40 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 9.51 लाख हेक्टेयर रहा था।

### कुल स्थिति

कुल मिलाकर 20 फरवरी 2026 तक 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई हो चुकी है। दलहन, मोटे अनाज और तिलहन में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि धान का क्षेत्र स्थिर है। आगामी सप्ताहों में सिंचाई की उपलब्धता और मौसम की स्थिति के आधार पर बुवाई का रकबा और बढ़ने की संभावना है।

**ग्रीष्मकालीन फसलों के अंतर्गत क्षेत्र प्रगति ( क्षेत्रफल : लाख हेक्टेयर में )**

| क्र. | फसल | सामान्य ग्रीष्म क्षेत्र ( DES )* | अंतिम ग्रीष्म क्षेत्र 2025 | चालू वर्ष 2026 | पिछले वर्ष की समान अवधि 2025 | वृद्धि/ कमी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | **धान** | **31.49** | **33.28** | **17.78** | **17.78** | **0.00** |
| **2.** | **दलहन** | **23.40** | **27.07** | **0.91** | **0.76** | **0.15** |
| a | मूंग | 20.44 | 23.49 | 0.59 | 0.56 | 0.03 |
| b | उड़द | 2.96 | 3.58 | 0.25 | 0.19 | 0.06 |
| c | अन्य दलहन | 0.00 | – | 0.07 | 0.01 | 0.00 |
| **3.** | **मोटे अनाज** | **12.08** | **14.06** | **1.38** | **1.08** | **0.30** |
| a | ज्वार | 0.34 | 0.36 | 0.04 | 0.03 | 0.02 |
| b | बाजरा | 4.43 | 5.20 | 0.12 | 0.14 | –0.03 |
| c | रागी | 0.31 | – | 0.15 | 0.02 | 0.13 |
| d | छोटे मिलेट्स | 0.02 | – | 0.01 | 0.00 | 0.01 |
| e | मक्का | 6.98 | 8.50 | 1.06 | 0.89 | 0.17 |
| **4.** | **तिलहन** | **8.40** | **9.51** | **1.24** | **0.77** | **0.46** |
| a | मूंगफली | 3.40 | 4.20 | 1.04 | 0.60 | 0.44 |
| b | सूरजमुखी | 0.34 | 0.35 | 0.07 | 0.06 | 0.01 |
| c | तिल | 4.66 | 4.96 | 0.12 | 0.12 | 0.00 |
| d | अन्य तिलहन | 0.00 | – | 0.01 | 0.00 | 0.01 |
| | **कुल** | **75.37** | **83.92** | **21.30** | **20.38** | **0.92** |

*सामान्य क्षेत्र वर्ष 2022-23 से 2024-25 के औसत पर आधारित है।

# पूसा मेले में आईपीएल की सक्रिय भागीदारी

**नई दिल्ली ( कृषक जगत )।** नई दिल्ली, पूसा कृषि विज्ञान मेले में देशभर की उर्वरक, कीटनाशक और कृषि क्षेत्र से जुड़ी कंपनियों ने भाग लिया और किसानों को उर्वरक प्रबंधन, फसल पोषण तथा आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी।

इंडियन पोटाश लिमिटेड (आईपीएल) ने अपने तीन स्टॉल को एकीकृत कर एक समग्र कृषि स्टॉल स्थापित किया, जो आकर्षण का केंद्र रहा। यहां संतुलित उर्वरक प्रबंधन, फसल पोषण, पशु आहार, डेयरी एवं शुगर सेक्टर से जुड़े उत्पादों की जानकारी प्रदान की गई। किसानों को साहित्य वितरित किए गए। आईपीएल ने किसानों को 6R सिद्धांत-सही स्रोत, सही मात्रा, सही विधि, सही समय, उर्वरकों का सही संयोजन और जल का सही प्रबंधन-अपनाने के लिए प्रेरित किया। कंपनी के अधिकारियों ने बताया कि मेले के दौरान कृषि विशेषज्ञों ने किसानों से सीधा संवाद किया और आधुनिक पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (POPs) पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

# क्रॉपलाइफ ने सुरक्षित फसल संरक्षण पर दिया जोर

**नई दिल्ली।** क्रॉपलाइफ इंडिया ने पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 में फसल संरक्षण उत्पादों के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान चलाया। क्रॉपलाइफ इंडिया ने अपने स्टॉल पर किसानों को सही खुराक, सुरक्षित छिड़काव, भंडारण नियम और उत्पाद की प्रामाणिकता की जांच संबंधी जानकारी दी। किसानों को सलाह दी गई कि वे केवल

लाइसेंसधारी विक्रेताओं से ही उत्पाद खरीदें, पक्का बिल लें, पैकेजिंग व एक्सपायरी तिथि जांचें और लेबल निर्देशों का पालन करें, ताकि नकली व अवैध उत्पादों से बचा जा सके। स्टॉल का मुख्य आकर्षण लोक शैली में प्रस्तुत जागरूकता गीत रहा-

'गांव गांव टोले टोले घर घर अलख जगाना है,
कीटनाशक उपयोग को जिम्मेदारी से निभाना है।'

इस प्रस्तुति के माध्यम से छिड़काव की मात्रा, मिश्रण विधि, प्रतीक्षा अवधि और सुरक्षा सावधानियों जैसे तकनीकी संदेशों को सरल भाषा में समझाया गया।

## पूसा कृषि विज्ञान मेला... ( प्रथम पृष्ठ का शेष )

**समयबद्ध भुगतान और वित्तीय जवाबदेही:** श्री चौहान ने कहा कि यदि कोई एजेंसी या राज्य सरकार किसानों का भुगतान रोकती है, तो उसे बकाया राशि पर 12 प्रतिशत ब्याज देना होगा। उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) का उल्लेख करते हुए कहा कि लगभग 75 प्रतिशत छोटे किसान प्रभावी 4 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर रहे हैं। ऋण वितरण में देरी मंजूर नहीं है और बैंकों को समयबद्ध तथा सरल प्रक्रिया सुनिश्चित करनी होगी।

**योजनाओं की निगरानी, केवीके की भूमिका और लाइसेंस सुधार :** कृषि यंत्रीकरण, ड्रिप, स्प्रिंकलर, पालीहाउस और ग्रीनहाउस जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए श्री चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार 18 से अधिक योजनाओं के तहत राज्यों को संसाधन उपलब्ध कराती है। हालांकि, केवल धन जारी करना पर्याप्त नहीं है; यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि लाभ वास्तविक किसानों तक पहुँचे। एक जिले का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि सूची में 700 किसानों के नाम होने के बावजूद केवल 158 किसानों को मशीनें मिलीं। निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाएगा।

**एमएसपी, सब्सिडी और 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' :** न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की वर्तमान तीन महीने की समय-सीमा को अव्यावहारिक बताते हुए कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों के पास लंबे समय तक भंडारण की क्षमता नहीं होती। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्यों के साथ मिलकर अधिकतम एक महीने में खरीद प्रक्रिया पूरी करने की व्यवस्था बनाई जाए, ताकि किसानों को शीघ्र भुगतान मिल सके। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार खाद सब्सिडी पर लगभग 2 लाख करोड़ रुपये खर्च करती है। इस पर विचार किया जाना चाहिए कि सब्सिडी सीधे किसानों के खातों में डीबीटी के माध्यम से दी जाए, ताकि किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार उर्वरक का चयन कर सकें। श्री चौहान ने 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का उल्लेख करते हुए कहा कि अप्रैल से खरीफ सीजन से पहले वैज्ञानिकों की टीमें गांव-गांव जाकर किसानों से सीधा संवाद करेंगी।

# किसानों के सम्मान और समृद्धि के लिए सरकार प्रतिबद्ध : श्री साय

## मुख्यमंत्री ने किसानों के खातों में अंतरित की 10 हजार 324 करोड़ रुपए की राशि

**रायपुर।** मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने बिल्हा विकासखण्ड के रहंगी में कृषक उन्नति योजना अंतर्गत आयोजित आदान सहायता राशि वितरण समारोह एवं वृहद किसान सम्मेलन में प्रदेश के 25.28 लाख किसानों के खातों में 10 हजार 324 करोड़ रुपए से अधिक की राशि का अंतरण किया। इनमें बिलासपुर जिले के 1 लाख 25 हजार 352 किसान शामिल हैं, जिनके खातों में 494.38 करोड़ रुपए की राशि अंतरित की गई।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सहित अन्य अतिथियों का खुमरी और नांगर भेंटकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में 'कृषक उन्नति योजना का वरदान, छत्तीसगढ़ का हर किसान धनवान' थीम पर आधारित वीडियो का विमोचन भी किया गया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि आज का दिन किसान भाइयों के सम्मान का दिन है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 25 लाख 28 हजार से अधिक किसानों ने धान बेचा है और कृषक उन्नति योजना के माध्यम से आज 10 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि किसानों के खातों में अंतरित की गई है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि किसान भाई होली का त्योहार अच्छे से मनाएं, इसलिए होली के पूर्व यह राशि प्रदान की जा रही है।

कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि उन्नति योजना का लाभ देने के लिए मुख्यमंत्री जी किसानों के बीच आए हैं, यह बहुत ही ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने आज 10 हजार 300 करोड़ रुपए से अधिक की राशि किसानों के खातों में सीधे अंतरित की है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में हर साल किसानों के खातों में धान की राशि अंतरित की जा रही है। उन्होंने किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि धान से अधिक लाभ दलहन एवं तिलहन फसलों के उत्पादन में है और किसानों को फसल विविधीकरण अपनाना चाहिए।

कृषि मंत्री ने कहा कि खेती-किसानी में नवाचार और परिवर्तन से ही किसानों के जीवन में समृद्धि आएगी। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन एवं मत्स्यपालन को बढ़ावा देने के लिए भी कार्ययोजना बनाकर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने किसानों को मिश्रित कृषि तथा जैविक खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया तथा राशि अंतरित करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

**स्टॉलों का निरीक्षण**

कार्यक्रम में विधायक सर्वश्री श्री अमर अग्रवाल, श्री सुशांत शुक्ला, क्रेडा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सवन्नी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजेश सूर्यवंशी, पूर्व विधायक डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, छत्तीसगढ़ राज्य पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष श्री राजा पाण्डेय, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित के अध्यक्ष श्री रजनीश सिंह, महापौर श्रीमती पूजा विधानी सहित अन्य जनप्रतिनिधि, कृषि उत्पादन आयुक्त श्रीमती शाहला निगार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री पी दयानंद, संचालक कृषि श्री राहुल देव, कमिश्नर श्री सुनील जैन, आईजी श्री रामगोपाल गर्ग, कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल, एसएसपी श्री रजनेश सिंह, कृषि विभाग के अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

# किसानों, गरीबों और कमजोर वर्गों का बजट : श्री नेताम

**रायपुर।** कृषि और आदिम जाति विकास मंत्री श्री राम विचार नेताम ने वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी द्वारा सदन में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए प्रस्तुत 1 लाख 72 हजार करोड़ रुपये का बजट 'संकल्प' पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बजट संकल्प राज्य के किसानों गरीबों और कमजोर वर्गों के विकास के लिए मील का पत्थर का साबित होगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य की चहुमुखी विकास हो रहा है। विगत वर्षों में प्रस्तुत बजट, ज्ञान, गति के बाद अब संकल्प राज्य के उत्तरोतर विकास के लिए राह आसान करेगी। इसके साथ ही यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत /2047 की संकल्पों को पूरा करने में भी सहायक होगी।

श्री नेताम ने कहा कि यह बजट राज्य की संस्कृति और अर्थव्यवस्था के आधार स्तंभ कृषि को मजबूत करने वाला है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है जो आदिवासी बहुल क्षेत्रों में समग्र विकास सुनिश्चित करेगा। जनजातीय सुरगुड़ी स्टूडियो के लिए बजट प्रावधान किया गया है। अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण की राशि को 50 करोड़ से बढ़ाकर 75 करोड़ किया गया है। अन्य पिछड़ा वर्ग विकास प्राधिकरण के लिए 80 करोड़ का प्रावधान है। पिछड़ा वर्ग के हित में विभागाध्यक्ष भवन के लिए बजट प्रावधान किया गया है। प्रधानमंत्री जनमन योजना के अंतर्गत 500 करोड़ रुपये तथा आवास निर्माण के लिए 200 करोड़ का प्रावधान है। अनुसूचित जनजाति बहुल ग्राम पंचायतों में बैगा एवं पुजारी के लिए 3 करोड़ का प्रावधान किया गया है। निश्चित ही यह बजट राज्य के लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त करने में अहम भूमिका निभाएगी।

श्री नेताम ने प्रतिक्रिया में कहा कि छत्तीसगढ़ में कृषि हमारी संस्कृति है। किसानों के खाते में विगत इन तीन वर्षों में एक लाख 40 हजार करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान हो चुका है। कृषक उन्नति योजना के लिए 10 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है जो आधुनिक तकनीक और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देगी। मार्कफेड को धान उपार्जन के लिए 6 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान है। कृषि पंपों को नि:शुल्क बिजली के लिए 5500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

**छ.ग. बजट 2026-27**

# दलहन-तिलहन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए विशेष मिशन

अब दलहन, तिलहन, मक्का, कोदो-कुटकी, रागी उगाने वाले किसानों को भी इस योजना के तहत वित्तीय लाभ और बोनस मिलेगा। इसका सीधा उद्देश्य किसानों को केवल एक फसल पर निर्भर रहने के बजाय अन्य लाभदायक फसलों की ओर प्रेरित करना है।

**सिंचाई के संकट से मिलेगी मुक्ति**

खेती में सिंचाई की लागत को कम करने के लिए सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाया है।

राज्य के किसानों को 5 एचपी तक के कृषि पंपों पर मुफ्त बिजली की सुविधा मिलती रहेगी। इसके लिए बजट में 5,500 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इस फैसले से राज्य के लाखों किसान परिवारों को बिजली बिल के बोझ से राहत मिलेगी

**तेल और दालों पर विशेष मिशन**

भारत को खाद्य तेल और दलहन (दालों) के मामले में आत्मनिर्भर बनाने के प्रधानमंत्री मोदी के विजन को छ.ग. सरकार ने इस बजट में मजबूती दी है।

**ऑयल पाम की खेती:** केंद्र सरकार के अनुदान के ऊपर राज्य सरकार 150 करोड़ रुपये का अतिरिक्त 'टॉप-अप' अनुदान देगी।

**दलहन आत्मनिर्भरता मिशन :** दालों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए 100 करोड़ रुपये का अलग से बजट रखा गया है।

**प्राकृतिक खेती :** रसायनों के उपयोग को कम करने और 'जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग' को बढ़ावा देने के लिए 40 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

**पशुपालन और मत्स्य पालन**

खेती के साथ-साथ सहायक व्यवसायों को मजबूत करने के लिए भी बड़े ऐलान हुए हैं :

**एक्वा पार्क :** कोरबा के हसदेव बांगो जलाशय में 5 करोड़ रुपये की लागत से एक आधुनिक 'एकीकृत एक्वा पार्क' बनाया जाएगा, जिससे मछली पालन क्षेत्र में क्रांति आएगी।

**डेयरी विकास :** रायपुर, बिलासपुर और जगदलपुर के मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट्स का आधुनिकीकरण करने के लिए 90 करोड़ रुपये दिए गए हैं।

**नस्ल सुधार :** पशुओं की नस्ल सुधारने और चारा उत्पादन के लिए लगभग 18 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

**ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर और मजदूर कल्याण**

बजट में भूमिहीन मजदूरों का भी ख्याल रखा गया है। दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन मजदूर कल्याण योजना के लिए 600 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में पक्के मकानों के सपने को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत 4,000 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

### प्रमुख घोषणाएं

- भूमिहीन कृषि परिवारों के लिए 600 करोड़ रुपए
- कृषक उन्नति योजना के लिए 10 हजार करोड़
- कृषि पंपों के लिए 5500 करोड़ रुपए
- 50 लाख रुपए तक के विकास कार्य ग्राम सभा के माध्यम से
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 1700 करोड़ रुपए
- मुख्यमंत्री लखपति दीदी भ्रमण योजना लागू की जाएगी,
- बस्तर और सरगुजा में रोजगार आधारित उद्योगों को बढ़ावा, जैसे राइस मिल, पोल्ट्री फार्म और एग्रो-प्रोसेसिंग यूनिट के लिए 100 करोड़ रुपए का निवेश प्रावधान।
- 50 नए गोदाम - 150 करोड़
- ब्याज मुक्त कृषि ऋण - 300 करोड़
- इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय को - 250 करोड़


## कृषक जगत के स्वामित्व के सम्बन्ध में घोषणा
### फार्म-4

रजिस्ट्रेशन ऑफ प्रेस एण्ड बुक अधिनियम की धारा -8 के अंतर्गत कृषक जगत के पत्र स्वामित्व व अन्य विषयों का विवरण-

| | |
|---|---|
| 1. प्रकाशक | - एलआईजी 5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर |
| 2. प्रकाशक की अवधि | - साप्ताहिक |
| 3. प्रकाशक का नाम | - विजय कुमार बोन्द्रिया |
| 4. राष्ट्रीयता | - भारतीय |
| 5. सम्पादक | - सुनील गंगराड़े |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के मालिक अथवा साझेदार 1 प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं | - विजय कुमार बोन्द्रिया<br>सुनील गंगराड़े<br>सचिन बोन्द्रिया<br>अजय बोन्द्रिया<br>एलआईजी 5, सेक्टर 2 शंकर नगर, रायपुर |

मैं विजय कुमार बोन्द्रिया घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है.

**विजय कुमार बोन्द्रिया**
**प्रकाशक**

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

**अमृत जगत**

**जिसने अहंकार छोड़ दिया वे भवसागर तर गया।**

**- योग वशिष्ठ**

# होली के रंग को बदरंग न बनाएं

वैसे तो भारत के सभी त्यौहार उल्लास, उमंग और खुशियों से लबरेज होते हैं लेकिन होली ही एक ऐसा त्यौहार है जिसमें हर आयु वर्ग के लोग पूरी मस्ती से रंगों में सरोबार हो जाते हैं। होली भारतीय संस्कृति का वह उल्लासपूर्ण पर्व है, जिसमें रंग केवल चेहरे पर नहीं, बल्कि मन पर भी लगाए जाते हैं। यह पर्व वसंत के आगमन, प्रकृति के नवजीवन और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। फाल्गुन पूर्णिमा की संध्या से लेकर देर रात्रि में होलिका दहन किया जाता है जो हमें बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देती है। अगले दिन रंगोत्सव के रूप में प्रेम, सौहार्द्र और उत्साह के साथ समूचा देश रंगमय हो जाता है। किंतु विडंबना यह है कि जिस पर्व का उद्देश्य मन का मैल धोकर आपस में प्रेम और सौहार्द्र का परिचय देना होता है, वही कभी-कभी असंयम, प्रदूषण और अव्यवस्था के कारण बदरंग हो जाता है। होली वास्तव में रंगों का ही त्यौहार और खेल नहीं बल्कि यह सामाजिक भेदभाव मिटाने और रिश्तों की कड़वाहट को दूर करने का भी एक सुअवसर प्रदान करता है। लोकगीतों, फाग और हास्य-व्यंग्य की परंपरा समाज को खुलकर हँसने और जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। भारतीयता की इस विशाल विरासत और परंपरा में होली प्रेम और मेल-मिलाप का पर्याय भी बन जाता है लेकिन जब स्वार्थ, वैमनस्यता और संकुचित सोच के कारण कभी-कभी इस पर्व का मूल संदेश गौण हो जाता है। होली में पहले प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग किया जाता रहा है तथा टेसू (पलाश) के फूलों से केसरिया रंग, हल्दी से पीला और चुकंदर से गुलाबी रंग बनाया जाता था। लेकिन पिछले दो-तीन दशकों से बाजार में मिलने वाले सस्ते रासायनिक रंगों ने होली के स्वरूप को प्रभावित किया है। इन रंगों में सीसा, क्रोमियम और अन्य हानिकारक तत्व मिलाए जाते हैं जो त्वचा रोग, एलर्जी, आँखों में जलन और बालों को नुकसान पहुंचाते हैं। बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए ये रासायनिक रंग तो विशेष रूप से हानिकारक होते हैं। आज आवश्यकता है कि हम फिर से उन्हीं सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल रंगों की ओर लौटें। घर में बने गुलाल या विश्वसनीय स्रोत से खरीदे गए हर्बल रंग स्वास्थ्य के लिए बेहतर विकल्प हैं। हालांकि कुछ वर्षों से प्राकृतिक रंगों और गुलाल से होली खेलने का रिवाज बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश में तो वन विभाग हर्बल रंग और गुलाल तैयार कर रियायत कीमतों पर आम जनता को उपलब्ध

करवाता है। आम जनता में भी प्राकृतिक रंगों के प्रति रूचि बढ़ रही है और इसकी लोकप्रियता का इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि रंग और गुलाल की मांग पूरी नहीं कर पाते हैं। होली में एक ओर जहां प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर कुछ लोग होली के नाम पर छेड़छाड़, अभद्रता और जबरदस्ती रंग लगाने से बाज नहीं आते जिसके कारण घटित होने वाली ये घटनाएँ समाज के लिए कलंक हैं। 'बुरा न मानो होली है' वाक्य की आड़ में किसी को भी मर्यादा से इतर कोई भी असामाजिक कार्य करने की छूट नहीं दी जा सकती। यह वाक्य किसी को असहज या आहत करने का लाइसेंस नहीं हो सकता। किसी की सहमति के बिना रंग लगाना या मज़ाक करना अनुचित है। परिवार और समाज का दायित्व है कि वह इस दिन विशेष सतर्कता बरते और महिलाओं, बच्चों तथा बुजुर्गों की गरिमा का सम्मान करे। होली में नशे के प्रचलन में वृद्धि हो रही है और नशा करने वालों में सर्वाधिक युवा वर्ग होता है। शराब या अन्य मादक पदार्थों के सेवन से दुर्घटनाएँ होती हैं। विवाद भी होते हैं और कभी-कभी ये तो प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं। इससे पूरे उत्सव का वातावरण ही दूषित हो जाता है। होली के अवसर पर जल की अत्यधिक बर्बादी भी एक गंभीर चिंता का विषय हो सकता है। जल संकट से जूझते देश में करोड़ों लीटर पानी केवल मनोरंजन के लिए बहा दिया जाता है। इसलिए कुछ वर्षों से केवल गुलाल से सूखी होली खेलने की परंपरा का प्रचलन बढ़ रहा है। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अधिक संयमित है। गुलाल से होली खेलने से पर्व की मर्यादा बनी रहती है और विवाद आदि से भी निजात मिलती है। सोशल मीडिया के इस दौर में अधिकांश लोग अपनी तस्वीर साझा करना चाहते हैं और कभी-कभी अतिउत्साह में या जान-बूझकर विशेषकर महिलाओं/बालिकाओं के चित्र भी वायरल कर देते हैं। किसी की अनुमति के बिना उसकी तस्वीर या वीडियो साझा करना निजता का उल्लंघन है। इसलिए इस बात का भी ध्यान रखते हुए डिजीटल मर्यादा का पालन करना चाहिए। जिस तरह मकर संक्रान्ति के अवसर पर चीनी मांझा पर प्रतिबंध के बावजूद पतंग उड़ाने के लिए यह मांझा चोरी-छुपे विक्रय किया जाता है और हर साल अनेक घटनाएं चीनी मांझा के कारण होती हैं। इसी प्रकार होली के दौरान हानिकारक रासायनिक रंग बाजारों में खुलेआम विक्रय किये जाते हैं। यहां सबसे अधिक जिम्मेदारी परिवार की होती है, उन्हें ऐसे हानिकारक रासायनिक रंगों को घर में लाने से परहेज करना चाहिए। प्रशासन को भी चाहिए कि वह मिलावटी और हानिकारक रासायनिक रंगों की बिक्री पर रोक लगाए और सुरक्षा के उचित प्रबंध करे। आइए, इस होली में हम संकल्प लें कि प्राकृतिक रंगों और गुलाल का ही उपयोग तथा यथासम्भव जल की भी बचत करेंगे। यदि कोई रंग या गुलाल लगाने से मना करता है तो जबरदस्ती रंग और गुलाल नहीं डालेंगे। नशे से दूर रहेंगे और पर्यावरण की रक्षा करेंगे।

# ओरण के अस्तित्व के लिए 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति'

**• कौशल किशोर**

राजस्थान के करीब 41 लाख एकड़ 'ओरण भूमि' पर संकट के बादल छाए हुए हैं। सूबे की सरकार ने जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, जालोर और पाली जिले में 'सोलर पार्क' जैसे व्यावसायिक कार्यों के लिए नियमों को ताक पर रखकर सैकड़ों एकड़ ऐसी जमीन का भू-उपयोग बदलकर जनता को विरोध के लिए मजबूर किया है। इस 'ओरण क्षेत्र' को देश के अन्य क्षेत्रों में 'देवभूमि,' 'देवबनी' और 'गोचर' कहा जाता है।

सार्वजनिक उपयोग के कारण इसका नियंत्रण ग्रामसभा के आधीन होता है इसलिए ग्राम पंचायत की सहमति के बिना सरकार इस परिवर्तन के लिए अधिकृत भी नहीं है। ऐसा करने से पहले उतनी ही भूमि गोचर-ओरण के लिए अन्यत्र आवंटित करने का विधान है। इसके विरुद्ध ग्रामसभा प्रस्ताव पारित कर प्रशासन को ज्ञापन देने के साथ धरना-प्रदर्शन व यात्रा निकालकर जन-जागरण और सत्याग्रह करने में लगी है। सरकार और प्रशासन की कोशिशों के बावजूद यह सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। इसी के साथ 'अरावली संरक्षण आंदोलन' भी सुर्खियों में है।

उच्चतम न्यायालय केन्द्र सरकार की अनुशंसा पर 20 नवम्बर 2025 को अरावली पर्वत की परिभाषा बदल देता है। राजस्थान और गुजरात ही नहीं, बल्कि दिल्ली और हरियाणा में भी जनता इसका विरोध करने लगी है। लगातार बढ़ते इस विरोध को ध्यान में रखकर 27 दिसम्बर को मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली

अवकाश पीठ ने इस पर स्थगनादेश जारी कर सुनवाई शुरू की, लेकिन सरकार और न्यायालय की मंशा भांपकर आम लोग सार्वजनिक उपयोग की जमीन को बचाने के लिए संघर्ष का बिगुल फूंक चुके हैं। 'अरावली संरक्षण आंदोलन' और 'ओरण क्षेत्र' की रक्षा में लगे समूह एकजुट हो रहे हैं। जन-जागरण के लिए दोनों समूहों की सक्रियता साफ दिखती है। सार्वजनिक उपयोग की भूमि उद्योगपतियों को सौंपने के मामले में सरकार को आने वाले समय में मुश्किलों का सामना करना होगा।

**अरावली संरक्षण को लेकर उठे हाल के जनांदोलन ने एक बार फिर चरोखर यानि 'ओरण' और दुधारू पशुओं की अहमियत भी उजागर कर दी है। दरअसल पर्यावरण आसपास की तमाम-ओ-तमाम प्राकृतिक इकाइयों के मिलने से बनता है जिनमें चरोखर और पशु भी शामिल हैं।**

गौरक्षा आंदोलन के प्रवर्तक संत समाज के लोग भी इस जनांदोलन से जुड़कर विरोध दर्ज कर रहे हैं। हालांकि राजसत्ता के सामने इनकी हस्ती भी 1966 से ही 'पब्लिक डोमेन' में रही है। इंदिरा गांधी की सरकार ने देश को आईना दिखाया था। महात्मा गांधी और संघ परिवार से जुड़े धर्मपाल जी की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय पशु आयोग' का गठन कर 2001 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने एक पहल अवश्य शुरू की थी।

उन्नीसवीं सदी में भारत की राजनीतिक स्थिति इतनी खराब थी कि इसे ब्रिटिश उपनिवेश का हिस्सा होना पड़ा था। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर गौहत्या का नया दौर शुरू हुआ। हालांकि गोकशी मुगलों के समय ही जारी थी। अंग्रेजों ने बड़े पैमाने पर कत्लखाने बनाए थे। अंग्रेजी राज में सन् 1808 से 1947 के बीच बाजार को ध्यान में रखकर खोले गए बूचड़खाने की वजह से गाय का मांस और खाल विदेशी बाजार की जरूरतों को भी पूरा करने लगा। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान के अनुच्छेद 48 में गौहत्या पर प्रतिबंध लगाने का असफल प्रयास अवश्य शुरु हुआ, लेकिन शोषण की यह दास्तान आज भी जारी है। इस नई औपनिवेशिक परंपरा को तोड़ना भारतीय अस्मिता से जुड़ा गंभीर मामला है। गांधी इसे स्वतंत्रता की प्राप्ति से रत्ती भर कमतर नहीं आंकते थे। राजस्थान की स्थानीय संस्कृतियों से इतर पश्चिमी देशों के राजनीतिक दर्शन में वैज्ञानिक तकनीकी की अहम भूमिका है। इसका प्रभाव युद्ध से लेकर प्रकृति के दोहन तक विद्यमान है। इसने शारीरिक श्रम पर आधारित कृषि व गौसेवा के भारतीय दर्शन को बदलकर रख दिया है। गोबर और गोमूत्र जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। रासायनिक खाद और कीटनाशकों की वजह से क्षय हुई भूमि की गुणवत्ता सुधारने में इनकी अहम भूमिका हो सकती है। इक्कीसवीं सदी में 'श्री-अन्न' की पैरवी करने वाला भारत क्या अपनी ही पुरानी कृषि संस्कृति का पुनरुद्धार कर सकेगा? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के क्रम में कई गांठों को खोलने की आवश्यकता है।

आजादी के बाद खेत जोतने में सक्षम बैलों की जगह ट्रैक्टर का इस्तेमाल प्रचलन में आ गया है। कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक से दूसरा हमला भी किया गया। बैल और नंदी की जरूरत खत्म होती गई। 'गोचर भूमि' पर इन पशुओं के लिए चारागाह का प्रबंध था। इस मामले में एक और बात नजरंदाज करने योग्य नहीं है। आयुर्वेद में गाय के दूध से बने देसी घी की तुलना अमृत से की गई है। स्वास्थ्य के लिए इसे हानिकारक बताने की राजनीति भी इस कड़ी में शामिल है। इसके पीछे यदि कोई ठोस आधार रहा होता तो अब तक सामने अवश्य आता। यह अमरीकी 'फार्मा लॉबी' और आधुनिक चिकित्सा पद्धति के बीच गठजोड़ को ही दर्शाता है। इस मामले में एक ऐसी 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति' की जरूरत है, जो गौ-हत्या रोकने और 'गोचर भूमि' संरक्षण के साथ ही इन सभी समस्याओं को दूर करती हो। कृतज्ञता और सभी का हित गाय के प्रति श्रद्धा का मूल आधार है। 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति' के केन्द्र में इन्हें होना चाहिए।

(सप्रेस)

## धान-परती भूमि से समृद्धि की ओर

# छत्तीसगढ़ में राई-सरसों खेती का उभरता अवसर

**छत्तीसगढ़, जिसे 'मध्य भारत का धान का कटोरा' कहते हैं, अपनी कृषि अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार के रूप में खरीफ धान पर निर्भर रहा है। धान न केवल राज्य की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि सरकारी खरीद व्यवस्था के माध्यम से किसानों को स्थिर आय भी प्रदान करता है। हालांकि, धान की कटाई के बाद बड़ी मात्रा में कृषि भूमि परती रह जाती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता और किसानों की आय बढ़ाने के अवसर सीमित हो जाते हैं। राई-सरसों जैसी तिलहन फसलें इस परती भूमि को उत्पादक बनाने में मदद कर सकती हैं।**

धान परती भूमि को उत्पादक बनाने के लिए राई-सरसों की खेती अपनाना कई लाभ प्रदान कर सकता है, जैसे- ●किसानों की आय में वृद्धि ● फसल सघनता में सुधार ● खाद्य तेलों की आत्मनिर्भरता में योगदान ● टिकाऊ कृषि को बढ़ावा

इस तरह का बदलाव न केवल छत्तीसगढ़ की कृषि संरचना में सुधार करके और उपजाऊ बना सकता है, बल्कि पूरे भारत को तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। छत्तीसगढ़ का कुल कृषियोग्य क्षेत्र 4.78 मिलियन हेक्टेयर है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 35% है। इस क्षेत्र का केवल 23% सिंचित है। यहाँ की प्रमुख मृदाएँ लाल और पीली हैं। राज्य में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1,190 मिमी है, जिसमें से लगभग 88% वर्षा मानसून (मध्य जून से सितंबर) के दौरान होती है। राज्य की फसल सघनता लगभग 119% है और प्रमुख फसलों में धान, गेहूँ, मोटे अनाज, दलहन तथा तिलहन का उत्पादन होता है। छत्तीसगढ़ कृषि और जलवायु के दृष्टिकोण से तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित है- ● छत्तीसगढ़ मैदानी क्षेत्र ● बस्तर पठार ● उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र

राज्य की जलवायु मुख्यतः शुष्क उप-आर्द्र प्रकृति की है, जिसमें मध्यम शीतकालीन तापमान और स्पष्ट मानसूनोत्तर मौसम देखा जाता है। यह जलवायु रबी तिलहन फसलों के लिए विशेष रूप से अनुकूल है, बशर्ते खरीफ मौसम के बाद मृदा में शेष नमी का संरक्षण और उचित कृषि तकनीकों का प्रभावी उपयोग किया जाए। इस प्रकार, धान कटाई के बाद खाली रह जाने वाली भूमि में राई-सरसों की खेती न केवल किसानों के लिए नई आय का स्रोत बन सकती है, बल्कि राज्य और देश की कृषि एवं खाद्य सुरक्षा रणनीति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

### धान का प्रभुत्व और परती भूमि की चुनौती

छग में लगभग 3.9 मिलियन हेक्टेयर में धान की खेती होती है, जो मुख्यतः वर्षा आधारित परिस्थितियों में ऊँचे भूभाग और निचले क्षेत्रों में फैली है। राज्य का धान उत्पादन लगभग 9.8 मिलियन टन है। खरीफ ऋतु में अधिक वर्षा और चिकनी मिट्टी के कारण धान का उत्पादन भरपूर होता है, लेकिन रबी में यही खेती सीमित रह जाती है। धान के कुल क्षेत्र का लगभग 32% भाग ही सिंचित है, जिससे कटाई के बाद लगभग 40-60% खेत परती रह जाते हैं, मुख्यतः वर्षा आधारित ऊँचे क्षेत्रों और पहाड़ी इलाकों में।

**भूमि के परती रहने के प्रमुख कारण हैं-**

● मानसून के बाद मिट्टी की नमी का तेजी से कम हो जाना। ● निचले तल क्षेत्रों में जलभराव की समस्या। ● लंबी अवधि वाली धान किस्मों की देर से कटाई ● अल्पावधि वाली किस्मों तिलहन व दलहन के बीजो की कमी ● आवारा पशुओं द्वारा नुकसान ● किसानों की सीमित तकनीकी जानकारी और जोखिम न ले पाना

यह अनुमान है कि, खरीफ धान क्षेत्र का लगभग 50% भाग रबी मौसम में परती रह जाता है, जो की फसल विविधीकरण के लिए बहुत अच्छा है।

### राई-सरसों : धान परती भूमि के लिए रणनीतिक विकल्प

रबी फसलों में राई-सरसों धान परती भूमि के लिए सबसे उपयुक्त फसल के रूप में उभर रही है। क्योंकि इसे कम पानी में उगाया जा सकता है, अल्प अवधि में पक जाती है और विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में अनुकूलन क्षमता रखती है। भारत में राई-सरसों देश की सबसे महत्वपूर्ण तिलहन फसलों में से एक है, जो कुल तिलहन क्षेत्रफल का 30% है, और कुल उत्पादन का 33% योगदान देती है। वर्ष 2023-24 में भारत में इसका उत्पादन लगभग 13.2 मिलियन टन रहा, जिससे यह देश की मुख्य तिलहन फसल बन गई राई-सरसों की कई जैविक और कृषि संबंधी विशेषताएँ इसे छत्तीसगढ़ के धान परती भूमि के लिए आदर्श बनाती हैं-

### राई-सरसों की विशेषताएँ

**मृदा की शेष नमी का कुशल उपयोग-** सरसों बिना सिंचाई या सीमित नमी में भी उगाई जा सकती है।

**कम अवधि की फसल-** अधिकांश किस्में 90-120 दिनों में पकती हैं। जो धान की कटाई के बाद उपयुक्त है।

**जलवायु सहनशीलता-** सरसों मध्यम सूखे और तापमान में उतार-चढ़ाव सहन कर सकती है।

**बाजार मांग-** सरसों का तेल पूर्वी और मध्य भारत में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, जिससे तेल की स्थिर मांग और मूल्य स्थिरता बनी रहती है।

राई-सरसों छत्तीसगढ़ की धान-परती पारिस्थितिकी के लिए अत्यंत उपयुक्त फसल है। फसल बुवाई की अवधि नवंबर के दुसरे पखवाड़े से लेकर दिसंबर के पहले सप्ताह तक होती है, जो 25-30 डिग्री सेंटीग्रेड के अनुकूलित शीतकालीन तापमान के लिए उपयुक्त है। यह तापमान राई-सरसों तथा तोरिया की वृद्धि और विकास के लिए आदर्श है। कम पानी और कम लागत वाली फसल होने के कारण राई-सरसों को अन्य अनाज फसलों की तुलना में बहुत कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसे धान की कटाई के तुरंत बाद शून्य जुताई (जीरो टिलेज) या न्यूनतम जुताई के साथ सफलतापूर्वक बोया जा सकता है। इसकी 90-120 दिनों की अल्प अवधि इसे खरीफ के बाद नमी रहित या कम नमी वाले खेतों में बिना फसल चक्र को प्रभावित किए आसानी से समायोजित होने की सुविधा देती है। इसके अतिरिक्त, चना के साथ एकल या मिश्रित फसल के रूप इसका उत्पादन संभव है।

आर्थिक दृष्टि से भी राई-सरसों किसानों के लिए स्पष्ट लाभ प्रदान करती है। इसकी खेती की लागत अपेक्षाकृत कम है और आकर्षक न्यूनतम समर्थन मूल्य के माध्यम से मूल्य समर्थन सुनिश्चित होता है। वर्तमान में राज्य में राई-सरसों का सीमित क्षेत्रफल लगभग 31,000 हेक्टेयर है, जिसमें लगभग 17,260 टन उत्पादन और 563 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की उत्पादकता दर्ज की गई है। राई-सरसों की लाभप्रदता और अनुकूलन क्षमता धान-परती क्षेत्रों में इसके व्यापक विस्तार की प्रबल संभावनाओं को दर्शाती है। अनुसंधान परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि उन्नत राई-सरसों उत्पादन तकनीकों को अपनाने से पारंपरिक किसान पद्धतियों की तुलना में धान-परती परिस्थितियों में 20% से अधिक उपज वृद्धि संभव है।

### खाद्य तेल उद्योगों को प्रोत्साहन

धान- परती क्षेत्रों में राई-सरसों के विस्तार से स्थानीय तेल प्रसंस्करण उद्योगों के लिए मजबूत मांग उत्पन्न होगी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे और मध्यम स्तर के ऑयल एक्सपेलर एवं रिफाइनिंग इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय मूल्य श्रृंखलाओं (वैल्यू चेन) के विकास से ग्रामीण उद्यमिता और कृषि-औद्योगिक प्रगति को नई गति मिल सकती है।

### भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की भूमिका

अखिल भारतीय समन्वित राई-सरसों अनुसंधान परियोजना- (AICRP-RM) के माध्यम से उच्च उत्पादकता एवं रोग-प्रतिरोधी किस्मों के विकास और प्रसार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। साथ ही, धान-परती क्षेत्रों के लिए उपयुक्त शून्य जुताई (ज़ीरो टिलेज) तकनीकों को बढ़ावा देने के साथ विविध कृषि-पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप जलवायु-सहिष्णु किस्मों की पहचान करके उत्पादन को बढाना आईसीएआर के प्रमुख उद्देश्य हैं इन प्रयासों को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन) और व्यापक किसान प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा सुदृढ़ किया जाता है, ताकि खेत स्तर पर तकनीकों को शीघ्र अपनाया जा सके। साथ ही AICRP-RM के अंतर्गत छत्तीसगढ़ (कृषि-जलवायु क्षेत्र–V) के लिए देरी से बुवाई की परिस्थितियों में उपयुक्त तथा उच्च उत्पादन एवं उत्पादकता वाली विभिन्न किस्मों का विकास किया गया है।

### आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर की पहल

धान-परती भूमि को उत्पादक बनाने की दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थान-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर ने वैज्ञानिक अनुसंधान और संस्थागत हस्तक्षेपों के माध्यम से उल्लेखनीय पहल की है। विशेष रूप से एससीएसपी (SCSP) और टीएसपी (TSP) योजनाओं के अंतर्गत आयोजित प्रदर्शनों ने यह सिद्ध किया है कि राई-सरसों की उन्नत किस्में धान-परती क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त और लाभकारी विकल्प बन सकती हैं। आईसीएआर-एनआईबीएसएम ने पिछले तीन वर्षों से संस्थान में खेत-स्तर पर संभावित राई-सरसों किस्मों का व्यवस्थित मूल्यांकन किया गया। इन परीक्षणों में डीआरएमआर-150-35 किस्म ने अत्यंत उत्साहजनक परिणाम दिए यह किस्म 95-110 दिनों में परिपक्व हो जाती है, जिससे धान की कटाई के बाद मध्य नवंबर से दिसंबर के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुवाई सहजता से की जा सकती है।

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि एफिड (चैंपा) को छोड़कर प्रमुख कीट एवं रोगों का कोई गंभीर प्रकोप नहीं देखा गया। यह इसकी जैविक तनाव सहनशीलता और स्थानीय परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किस्मों को अपनाकर किसान कम जोखिम में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

### आर्थिक लाभ और आजीविका सुरक्षा

धान-परती क्षेत्रों में राई-सरसों को शामिल करने से किसानों की आय और आजीविका सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। वर्षा आधारित धान पारिस्थितिकी तंत्र में किए गए प्रदर्शनों से यह सिद्ध हुआ है कि शून्य जुताई प्रणाली के अंतर्गत राई-सरसों की खेती से 8-14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। अल्प अवधि में प्रति हेक्टेयर रु. 27,000 से अधिक का शुद्ध लाभ अर्जित किया जा सकता है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए, जो खरीफ फसल पर निर्भर रहते हैं, राई-सरसों की खेती कई दृष्टियों से लाभकारी सिद्ध हो रही है- ● रबी मौसम में अतिरिक्त आय का स्रोत ● फसल प्रणाली का विविधीकरण ● ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर ● फसल विफलता की स्थिति में वित्तीय जोखिम में कमी

आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान के निदेशक एवं पूर्व निदेशक, आईसीएआर-भारतीय राई-सरसों अनुसंधान संस्थान, डॉ. पी. के. राय तथा संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा, जो असम में राई-सरसों क्षेत्र विस्तार हेतु विश्व बैंक समर्थित असम एग्रीबिजनेस एंड रूरल ट्रांसफॉर्मेशन प्रोजेक्ट (APART) के सफल क्रियान्वयन में मुख्य सलाहकार एवं प्रमुख विशेषज्ञ के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं, ने बल देकर कहा कि छत्तीसगढ़ के धान-परती क्षेत्रों में राई-सरसों की खेती को उन्नत किस्मों के व्यापक प्रसार, शून्य जुताई एवं नमी संरक्षण तकनीकों के प्रोत्साहन से तथा समय पर गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्धता सुनिश्चित करने के माध्यम से बड़े स्तर पर विस्तारित किया जा सकता है।

**प्रस्तुति : डॉ. पंकज शर्मा,**
**राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर**

### मधुमक्खी पालन

धान-परती क्षेत्रों में राई-सरसों की खेती के विस्तार से मधुमक्खी पालन के लिए एक मजबूत आधार तैयार होगा, क्योंकि ये फसलें रबी मौसम में अच्छा नेक्टर और परागकण प्रदान करती हैं। इससे सहायक उद्यम के रूप में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा मिलेगा, जो ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और छोटे किसानों के लिए रोजगार सृजित करेगा। परागण में वृद्धि से फसलों की उपज और गुणवत्ता में भी सुधार होगा। यह एक समग्र प्रणाली न केवल आजीविका को सुदृढ़ करेगी, बल्कि पारिस्थितिकीय स्थिरता को भी समर्थन देगी।

**उपयुक्त किस्में**

| किस्म | अधिसूचना वर्ष | परिपक्वता (दिन) | औसत उपज (किग्रा/हे.) | तेल (%) |
|---|---|---|---|---|
| छत्तीसगढ़ सरसों | 2010 | 120 | 1150 | 39 |
| टीबीएम-209 | 2019 | 112 | 1650 | 41 |
| एनआरसीएचबी-101 | 2009 | 115 | 1450 | 40 |
| डीआरएमआर 150-35 | 2020 | 110 | 1500 | 40 |
| बीबीएम-1 | 2022 | 115 | 1600 | 41 |

# आधुनिक समय की लाभकारी फसल ड्रैगन फ्रूट की खेती

● संदीप कुमार शर्मा ● डॉ. संजय सिंह
● वंशिका तिवारी

ड्रैगन फ्रूट, हिलोकेरस केक्टेसिया परिवार से संबंधित है। इसे होनोलुलु रानी व पिताया फल के नाम से भी जाना जाता है। यह संतरा, आम, पपीता, केला, सेब आदि की तुलना में अधिक पौष्टिक और फायदेमंद फल है। ड्रैगन फ्रूट बाहर से अनन्नास की भांति दिखाई देता है, लेकिन अन्दर से गूदा सफेद और काले छोटे-छोटे बीजों से भरा हुआ नाशपाती या कीवी की तरह होता है। इस आकर्षक एवं रहस्यमय फल का रंग लाल-गुलाबी होता है। इसकी त्वचा में हरे रंग की पंक्तियां होती हैं, जो ड्रैगन की तरह दिखाई देती हैं इसलिए इसको ड्रैगन फ्रूट के नाम से भी जाना जाता है। ड्रैगन फ्रूट ज्यादातर मैक्सिको और मध्य एशिया में पाया जाता है। यह फल खाने में तरबूज की तरह मीठा होता है।

बीते हुए 3 से 4 साल में जलवायु में काफी परिवर्तन आया है, सूखा पड़ने की स्थिति में भी खराब मिट्टी में भी हो सकता है ड्रैगन फ्रूट में हीलिंग के अच्छे गुण पाए जाते हैं यही कारण है की पौधे की कीमत बाजार में रु. 60 से लेकर रु. 200 तक होती हैं ड्रैगन फ्रूट की कीमत पौधों के पुराने होने पर निर्भर करती है जितना ज्यादा पुराना पौधा होता उसकी कीमत इतनी ही ज्यादा होगी 3 साल पुराने पौधे पर लगाने पर आपको जल्दी उत्पादन मिलने लगेगा।

### ड्रैगन फ्रूट के मुख्य प्रकार

बाहरी रंग और गूदे के आधार पर यह फल मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है:

- सफेद गूदा वाला, लाल रंग का फल
- लाल गूदा वाला, लाल रंग का फल
- सफेद गूदा वाला, पीले रंग का फल पोषक तत्व

### विदेशी फल है ड्रैगन फ्रूट

ड्रगन फ्रूट भारतीय फल नहीं है, लेकिन इसके लाजवाब स्वाद और लाभकारी फायदों के कारण भारत में भी इसकी मांग काफी बढ़ गयी है। यही वजह है कि हमारे देश में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में इसका सर्वाधिक उत्पादन किया जा रहा है। ड्रैगन फ्रूट का उपयोग ताजे फल के रूप में करने के साथ-साथ रस, जैम तथा आइसक्रीम के रूप में भी किया जाता है। यह फल खाने में तो स्वादिष्ट लगता ही है, इसके अलावा यह अनेक गंभीर रोगों को ठीक करने की क्षमता भी रखता है।

**ड्रैगन फ्रूट एक प्रकार का विदेशी फल होता है सिर्फ किसानों की आमदनी को दोगुना करती है बल्कि इसमें विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व भी पाए जाते हैं आकर्षक दिखने के कारण इस फल की बाजार में काफी ज्यादा मांग रहती है। भारत में इसकी खेती की जाती है जिसे ड्रैगन फ्रूट के नाम से जाना जाता है विभिन्न प्रकार के शहरी उपभोक्ता जो मधुमेह कार्डियो वैस्कुलर और अन्य तनाव संबंधी बीमारियों से पीड़ित हैं और प्राकृतिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं ड्रैगन फ्रूट उन लोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है।**

### जलवायु

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय मौसम की स्थिति बेहतर होती है। ड्रैगन फ्रूट की खेती 50 सेमी की वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी हो सकती है। इसके लिए 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। ड्रैगन फ्रूट की फसल के लिए तेज धूप की जरूरत नहीं होती है।

### मृदा

ड्रैगन फ्रूट की खेती में अधिकतर बलुई दोमट या मिट्टी की दोमट आवश्यकता हो सकती है। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए रेतीली मिट्टी बेहतर होती है। इसकी खेती करने के  खेत की अच्छे से जुताई करें और खर पतवार से मुक्त हो। इसकी खेती के लिए मिट्टी का पीएम मान 5.5 से 7 के बीच हो। इसके साथ ही खेत तैयार करते वक्त ही खेत में क्षेत्रफल के हिसाब से जैविक खाद डालें।

### भूमि की तैयारी

खेत अच्छी तरह से जुताई किया हुआ हो, कीट-पतंगों व खरपतवारों से मुक्त हो। भूमि में 20 से 25 टन प्रति हेक्टर की दर से अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट मिला दें।

### ड्रैगन फ्रूट की कैसे करें रोपाई

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए मूल रूप से दो तरीके हैं। पहला ड्रैगन को सीधे चाकू से काटकर दो भागों में बांटकर उसके अंदर से काले बीज निकाल कर खेती के लिए उसका उपयोग कर सकते हैं। पर इसस पौधे उगाने में समय लगता है इसलिए कमर्शियल खेती के लिए यह उचित नहीं है। दूसरा तरीका है इसके कटिंग को खेत में लगाना। ड्रैगन फ्रूट की रोपाई से दो दिन पहले मदर ड्रैगन पौधों को 20 सेमी की लंबाई में काट लें और लगाने से पहले इस कटिंग पीस को सूखे गोबर, ऊपरी मिट्टी और रेत के मिश्रण के साथ 1:1:2 के अनुपात में एक बर्तन में रखें। इन कटे हुए टुकड़ों से धूप से बचें।

प्रत्येक पौधे को उनके बीच 2×2 मीटर की जगह रखें और 60×60× 60 सेमी आकार के गड्ढे में लगाएं। साथ ही इस गड्ढे को 100 ग्राम सुपर फास्फेट खाद से भर दें। 1 एकड़ भूमि में लगभग 1700 ड्रैगन फ्रूट के पौधे हैं। पौधे के समुचित विकास और विकास के लिए कांक्रीट या लकड़ी के स्तंभों का सहारा लें।

### अंतरण

अधिक उत्पादन के लिए पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 2×2 मीटर रखते हैं। गड्ढे का आकार 60×60×60 सें.मी. रखते हैं।

### पादप सघनता

ड्रैगन फ्रूट से अधिकतम उत्पादन लेने के लिए

एक हेक्टर भूमि में लगभग 277 पौधे लगाए जा सकते हैं। ट्रिमिंग व प्रूनिंग पौधों की सीधी वृद्धि एवं विकास के लिए इनको लकड़ी व सीमेंट के खंभों से सहारा प्रदान करें। अपरिपक्व पादप तनों को इन खंभों से बांधकर, पार्श्विक शाखाओं को सीमित रखते हुए दो से तीन मुख्य तनों को बढ़ने के लिए छोड़ दें। इसके बाद इसके ढांचे को गोलाकार रूप में सुरक्षित कर लें।

### खाद एवं उर्वरक

अधिक उत्पादन लेने के लिए प्रत्येक पौधे को अच्छी सड़ी हुई 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद दें। इसके अलावा लगभग 250 ग्राम नीम की खली, 30-40 ग्राम फोरेट एवं 5-7 ग्राम बाविस्टीन प्रत्येक गड्ढे में अच्छी तरह मिला देने से पौधों में मृदाजनित रोग एवं कीट नहीं लगते हैं। 50 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण बनाकर पौधों को फूल आने से पहले अप्रैल में फल विकास अवस्था तथा जुलाई-अगस्त और फल तुड़ाई के बाद दिसबंर में दें।

### सिंचाई

ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर इरिगेशन, माइक्रो जेट और बेसिन इरिगेशन जैसी नवीनतम तकनीक में कई सिंचाई प्रणालियाँ उपलब्ध हैं लेकिन ड्रैगन फ्रूट प्लांट को अन्य फलों की खेती की तुलना में कम पानी की आवश्यकता होती है।

ड्रैगन फ्रूट के पौधे लगाने के एक साल बाद फल लगने शुरू हो जाते हैं। फूल आने के एक महीने बाद, ड्रैगन फ्रूट कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। अपरिपक्व ड्रैगन फ्रूट में चमकीले हरे रंग की त्वचा होती है। कुछ दिनों बाद फलों का छिलका गहरे हरे से लाल रंग का हो जाता है। ड्रैगन फ्रूट की कटाई का बेहतर समय फल के त्वचा का रंग बदलने के 3 से 4 दिन बाद होता है।

### कीट एवं व्याधियां

सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट में कीट और व्याधियों का प्रकोप कम होता है। फिर भी इसमें एंथ्रेक्नोज रोग व थ्रिप्स कीट का प्रकोप देखा गया है। एंथ्रेक्नोज रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब दवा के घोल का 0.25 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें। थ्रिप्स के लिए एसीफेट दवा का 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

### तुड़ाई

प्रायः ड्रैगन फ्रूट प्रथम वर्ष में फल देना शुरू कर देता है। सामान्यतः मई और जून में फूल लगते हैं तथा जुलाई से दिसंबर तक फल लगते हैं। पुष्पण के एक महीने बाद फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस अवधि के दौरान इसकी 6 तुड़ाई की जा सकती है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई का सही समय रंग परिवर्तित होने के तीन-चार दिनों बाद का होता है। फलों की तुड़ाई दरांती या हाथ से की जाती है।

### उपज

ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक सीजन में 3 से 4 बार फल देता है। प्रत्येक फल का वजन लगभग 300 से 800 ग्राम तक होता है। एक पौधे पर 50 से 120 फल लगते हैं। इस प्रकार इसकी औसत उपज 5 से 6 टन प्रति एकड़ होती है।

**ड्रैगन फ्रूट के प्रति 100 ग्राम ताजे फल में पाए जाने वाले प्रमुख पोषक तत्व**

| पोषक तत्व | मात्रा | पोषक तत्व | मात्रा |
|---|---|---|---|
| नमी | 85.3 प्रतिशत | विटामिन 'ए' | 0.01 मि.ग्रा |
| प्रोटीन | 1.10 ग्राम | नियासिन | 2.80 मि.ग्रा |
| वसा | 9.57 मि.ग्रा. | कैल्शियम | 10.20 मि.ग्रा |
| क्रूड फाइबर | 1.34 मि.ग्रा. | आयरन | 3.37 मि.ग्रा |
| ऊर्जा | 67.70 कि. कैलोरी | मैग्नीशियम | 38.90 मि.ग्रा |
| कार्बोहाइड्रेट | 11.2 मि.ग्रा. | फास्फोरस | 27.75 मि.ग्रा |
| ग्लूकोज | 5.70 मि.ग्रा. | पोटेशियम | 272.0 मि.ग्रा |
| फ्क्टोज | 3.20 मि.ग्रा. | सोडियम | 8.90 मि.ग्रा |
| सोरबिटोल | 0.33 मि.ग्रा. | जिंक | 0.35 मि.ग्रा |
| विटामिन 'सी' | 3.00 मि.ग्रा |  |  |

### ड्रैगन फ्रूट के स्वास्थ्य लाभ

- ड्रैगन फ्रूट फल में कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने की क्षमता होती है।
- शुगर डायबिटीज के रोगियों के लिए या काफी ज्यादा लाभदायक होता है।
- ड्रैगन फ्रूट फाइबर युक्त होता है जो आपके शरीर में आवश्यक पोषक तत्व की कमियों को पूरा करता है।
- इसका सेवन करने से कार्डियोवैस्कुलर रोग होने का खतरा कम हो जाता है।
- हार्ट अटैक जैसे गंभीर रोगों से भी बचा जा सकता है।
- ड्रैगन फ्रूट में एंटीऑक्सीडेंट गुड़ की भरपूर मात्रा उपलब्ध होती है ।
- पोटेशियम और विटामिन की भी प्रचुर मात्रा ड्रैगन फ्रूट के फल में उपलब्ध होती है।

# पशुपालन - 'सुरक्षा भी, उत्पादन भी'

● वंशिका तिवारी ● डॉ. अखिलेश कुमार
● डॉ. अनिल कुमार गिरी ● डॉ. संजय सिंह
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा

**सर्दी केवल ठंड का मौसम नहीं है। यह कोहरा, पाला, ठंडी हवाएँ और बढ़ी हुई नमी लेकर आती है, जो पशुओं के लिए बड़ी चुनौती बनती हैं। यदि इस मौसम में सही प्रबंधन न किया जाए तो दूध उत्पादन घटता है, पशुओं का वजन कम होता है और निमोनिया, दस्त तथा खुरपका-मुंहपका जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।**

## सर्दियों की प्रमुख चुनौतियाँ

● रात में तापमान 5 से 8 डिग्री सेल्सियस तक गिरना
● सुबह घना कोहरा
● खुले या अर्ध-खुले शेड में ठंडी हवाओं का प्रभाव
● अत्यधिक ठंडा पानी

इन परिस्थितियों में पशुपालन के लिए विशेष सावधानी आवश्यक है।

## गाय-भैंस पालन : आवास व्यवस्था

अधिकतर पशु खुले या अर्ध-खुले शेड में रखे जाते हैं। सर्दियों में निम्न बातों का ध्यान रखें:

● शेड उत्तर-दक्षिण दिशा में हो।
● पश्चिम और उत्तर दिशा से तिरपाल या बोरी द्वारा ढकाव करें।
● फर्श ऊँचा और पूरी तरह सूखा रखें।
● पुआल या भूसे की मोटी बिछावन करें।
● रात में ठंडी हवा का प्रवेश पूरी तरह रोकें।
● गीलापन और ठंडी हवा मिलकर निमोनिया का खतरा बढ़ाते हैं।

## विशेष आहार (ऊर्जा वृद्धि)

ठंड में पशु शरीर की गर्मी बनाए रखने के लिए अधिक ऊर्जा खर्च करता है, इसलिए संतुलित और ऊर्जा युक्त आहार आवश्यक है।

● गेहूँ भूसा और चना भूसा
● हरा चारा जैसे बरसीम और जई
● मक्का (ऊर्जा का मुख्य स्रोत)
● सरसों या सोयाबीन खली (प्रोटीन)
● चोकर
● मिनरल मिक्सचर 50 से 60 ग्राम प्रतिदिन
● नमक 30 ग्राम प्रतिदिन

दूध देने वाली गाय या भैंस को प्रत्येक एक लीटर दूध पर लगभग 400 ग्राम अतिरिक्त दाना दें।

## पानी का प्रबंधन

● सुबह 10 बजे के बाद पानी पिलाएँ।
● अत्यधिक ठंडा पानी न दें।
● यदि संभव हो तो हल्का गुनगुना पानी दें।
● अत्यधिक ठंडा पानी भूख कम कर देता है और दूध उत्पादन घटा सकता है।

## सामान्य रोग और रोकथाम

सर्दियों में निम्न रोग अधिक देखे जाते हैं:

● निमोनिया
● खुरपका-मुंहपका
● गलघोटू
● थनैला

## रोकथाम के लिए

● समय पर टीकाकरण कराएँ।
● प्रत्येक छह माह में कृमिनाशक दवा दें।
● खाँसी, नाक बहना या सुस्ती जैसे लक्षण दिखने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

वैज्ञानिक सलाह के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा से संपर्क किया जा सकता है, जहाँ संतुलित आहार और रोग नियंत्रण संबंधी प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन उपलब्ध है।

# बकरी पालन : विशेष सावधानी

बकरी पालन तेजी से बढ़ रहा है, परंतु सर्दियों में बकरी के बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं।

● शेड व्यवस्था
● ऊँचे और सूखे स्थान पर शेड बनाएँ।
● बाँस या लकड़ी का फर्श रखें ताकि नमी से बचाव हो।
● बच्चों को अलग और गर्म स्थान पर रखें।
● सीधी ठंडी हवा से बचाव करें।

## आहार प्रबंधन

● चना या अरहर का भूसा
● बरसीम तथा अन्य हरी पत्तियाँ
● मक्का, चोकर और खली का मिश्रण
● मिनरल मिक्सचर

सर्दियों में वजन और रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए ऊर्जा युक्त दाना आवश्यक है।

**सर्दियों में उत्पादन घटने के प्रमुख कारण**

| कारण | परिणाम |
|---|---|
| ऊर्जा की कमी | दूध उत्पादन कम |
| ठंडी हवा | निमोनिया |
| गीला फर्श | संक्रमण |
| ठंडा पानी | भूख में कमी |

## रोग नियंत्रण

● पीपीआर का टीकाकरण
● एंटरोटॉक्सिमिया का टीकाकरण
● समय पर कृमिनाशक दवा
● दस्त, कमजोरी या सुस्ती दिखने पर तुरंत उपचार

सर्दियों में बकरी के बच्चे विशेष देखभाल की मांग करते हैं।

## धूप का महत्व

सुबह 9 से 11 बजे की धूप अत्यंत लाभकारी होती है :

● विटामिन डी की प्राप्ति
● रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
● शरीर की प्राकृतिक गर्माहट

## निष्कर्ष

सर्दियाँ चुनौतीपूर्ण अवश्य हैं, परंतु सही प्रबंधन से यही मौसम लाभकारी बन सकता है।

● सुरक्षित और सूखा शेड
● ऊर्जा युक्त संतुलित आहार
● समय पर टीकाकरण
● नियमित निरीक्षण

'स्वस्थ पशु, मजबूत किसान और समृद्ध विंध्य यही सफल पशुपालन की पहचान है।'

कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

जैविक खेती समृद्ध कृषक | भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके | एकीकृत कीट प्रबंधन | मधुमक्खी पालन | जायद फसलें | सरसों | मसाला फसलें

सदाबहार खेती | चना | मृदा उर्वरता मैनुअल | खेती के उन्नत तरीके (खरीफ फसल) | खेती के उन्नत तरीके (रबी फसलें) | सोयाबीन अनुसंधान तकनीक | बाजरा की वैज्ञानिक खेती

रबी तिलहनी फसलें अलसी, कुसुम | मसूर, मटर एवं मोठ की उत्पादन तकनीक | लघु धान्य फसलों की उत्पादन तकनीक | कौशल विकास दिग्दर्शिका | गेहूं उत्पादन तकनीक | एकीकृत पौध पोषक तत्व प्रबंधन | पौध संरक्षण (खरीफ-रबी फसल सहित)

नाम ..... ग्राम.....
पोस्ट ..... तह. ..... जिला.....
फोन/मोबा. .....कुल राशि.....
ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. .....
मनी ऑर्डर क्र. ..... वी.पी. भेजें।

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर
मो. : 09826021837

# संतुलित खेती : समस्या से समाधान की ओर

**आज खेती का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग लगातार बढ़ा है। शुरुआत में इनसे बेहतर परिणाम मिले, लेकिन समय के साथ मिट्टी कमजोर होने लगी, नई बीमारियाँ बढ़ीं और कीटों में दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो गई। नतीजा यह हुआ कि हर नई फसल के साथ रसायनों की मात्रा भी बढ़ती गई और किसान एक ऐसे 'केमिकल कुचक्र' में फँस गया, जहाँ समाधान ही धीरे-धीरे समस्या बनता चला गया।**

**हर किसान के लिए तुरंत संभव नहीं**

अधिकांश किसान इस नुकसान को समझते हैं, फिर भी अत्यधिक रसायनों का उपयोग छोड़ नहीं पाते। कारण स्पष्ट है- उत्पादन घटने का डर और व्यवहारिक विकल्पों की कमी। पूरी तरह जैविक खेती अपनाना हर किसान के लिए तुरंत संभव नहीं होता, क्योंकि आय पर सीधा असर पड़ता है। ऐसे में किसानों द्वारा मिट्टी को बचाने और उत्पादन को स्थिर बनाए रखने के बीच संतुलन की तलाश शुरू हुई, जिसने 'संतुलित खेती' के इस अभियान को जन्म दिया।

**मिट्टी पहले जैसी नहीं रही**

इसी संतुलन की खोज की झलक मध्यप्रदेश के इटारसी क्षेत्र के सनखेड़ी गाँव के किसान 'गोविन्द चौरे' जी के जीवन में भी साफ तौर पर दिखाई देती है। पाँच एकड़ जमीन पर पारंपरिक फसलें उगाने वाले गोविन्द भी अत्यधिक रासायनिक उत्पादों का इस्तेमाल करते थे। हर साल बार-बार रासायनिक दवाइयों और उर्वरकों के छिड़काव के बावजूद उन्हें लगता था कि यही खेती का एकमात्र रास्ता है। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें महसूस होने लगा कि मिट्टी पहले जैसी नहीं रही मानो मिट्टी बंजर होने की तरफ बढ़ रही है।

गोविन्द जी ने विकल्प खोजने शुरू किए, पर पूरी तरह जैविक खेती अपनाना जोखिम भरा लगा। इसी दौरान उन्हें संतुलित खेती के बारे में जानकारी मिली- यह एकमात्र ऐसा तरीका है, जिसमें केमिकल को एक साथ पूरी तरह छोड़ने के बजाय किसान अपनी सुविधा और परिस्थिति के अनुसार धीरे-धीरे कम कर सकता है। संतुलित खेती किसानों को अपनी जरूरत और हालात के अनुसार धीरे-धीरे बदलाव करने की छूट देती है। कई किसानों ने पहले ही सीजन से केमिकल की मात्रा 50 प्रतिशत कम कर दी, फिर भी उत्पादन लगभग पहले जैसा ही बना रहा।

**रसायनों की मात्रा कम की**

गोविन्द जी ने रसायनों की मात्रा कम की, गैर रासायनिक उपाय जोड़े और खेत की जरूरत के अनुसार पोषण प्रबंधन करना शुरू किया, और पहले जहाँ उत्पादन 15 क्विंटल प्रति एकड़ वही अभी भी 14.5 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ बना रहा। गोविन्द जी का कहना है कि 'संतुलित खेती' उन्हें एक आशा की किरण की तरह लगती है, क्योंकि यह बिना उत्पादन घटाए भविष्य में भी मिट्टी को स्वस्थ रखने का रास्ता दिखाती है। उनका मानना है कि यही तरीका आने वाले समय में किसानों को उत्पादन और मिट्टी की सेहत के बीच संतुलन बनाने में बहुत लाभकारी साबित होगा।

**जैविक कार्बन की मात्रा लगभग 1 प्रतिशत**

विशेषज्ञ बताते हैं कि 1950 के दशक में भारतीय मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा लगभग 1 प्रतिशत हुआ करती थी, लेकिन आज यह घटकर अधिकांश इलाकों में केवल 0.3-0.4 प्रतिशत के बीच रह गई है। यह स्तर स्वस्थ और उत्पादक मिट्टी के लिए आवश्यक मानक से काफी नीचे है। चेतावनी यह भी है कि यदि जैविक कार्बन 0.3 प्रतिशत से कम हो गया, तो भूमि की उर्वरता गंभीर रूप से प्रभावित होगी और वह बंजर होने की स्थिति तक पहुँच सकती है। संतुलित खेती इस गिरावट को रोकने का एक व्यवहारिक उपाय बन सकती है।

आज गोविन्द जी जैसे किसान इस बात के उदाहरण बन रहे हैं कि खेती में बदलाव केवल नई तकनीक से ही नहीं, बल्कि सोच में परिवर्तन से भी आ सकता है। जब किसान तात्कालिक लाभ के साथ-साथ मिट्टी के दीर्घकालीन स्वास्थ्य को भी महत्व देने लगता है, तभी वह अन्य व्यवहारिक विकल्पों को खोजता है।

संतुलित खेती दरअसल उसी खोज का परिणाम है एक ऐसा मध्य मार्ग जो वर्तमान की जरूरतों और भविष्य की सुरक्षा दोनों को साथ लेकर चलता है। यह न तो पूरी तरह रसायनों पर निर्भर है और न ही तुरंत सब कुछ बदल देने की मांग करता है, बल्कि धीरे-धीरे उस दिशा में ले जाता है जहाँ खेती लाभकारी भी रहे और मिटटी भी अपने पुराने स्वस्थ स्वरूप में लौटे।

## समस्या -समाधान

**समस्या : पूसा में विकसित चारा फसलों की किस्मों की जानकारी दें?**

**समाधान:** पूसा ने चारा फसलों के रूप में ज्वार की एकल कटाई एवं बहु कटाई वाली संकर किस्में विकसित की हैं। एकल कटाई वाली प्रजातियाँ है पूसा चरी-6 एवं पूसा चरी-9 और बहु कटाई वाली किस्मों, पूसा चरी-23, पूसा चरी संकर-106, पूसा चरी-615, पूसा चरी-109 हैं। पूसा चरी-106 एवं पूसा चरी-23 पूरे भारत के लिए अनुमोदित है जबकि पूसा चरी-615, पूसा चरी -109 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए अनुमोदित है।

**समस्या : पूसा चरी 106 की क्या विशेषता है?**

**समाधान:** पूसा चरी 106 गर्मी एवं खरीफ के मौसम में सिंचित अवस्था में बुवाई के लिए उपयुक्त है। यह बहुकटाई वाली पहली संकर किस्म है जिसकी पत्तियां लम्बे समय तक हरी बनी रहती हैं। तना रसदार व मीठा होता है जिसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक (8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) होती है। यह फसल 50-55 दिनों में पहली कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

**समस्या : जौ की अधिक उपज देने वाली किस्में बताइए?**

**समाधान:** जौ की नवीनतम अधिक उपज वाली प्रजातियां निम्नलिखित हैं। समय से बुआई के लिए डीडब्ल्यूआरबी-92, डीडब्ल्यूआरबी-101 एवं पिछेती बुआई के लिए, डी.डब्ल्यू.आर.बी.-73, डी.डब्ल्यू.आर.बी.-91, बी.एच.-885 हैं।

**समस्या : अनाज भंडारण की सस्ती तकनीक क्या है?**

**समाधान:** अनाज में नमी का प्रतिशत- किसान भाई इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि खाद्यान्न पदार्थ में कीड़ों की प्रकोप के लिए एक निश्चित प्रतिशत में नमी होना आवश्यक है। अनाज भंडारण के समय 8-10 प्रतिशत या इससे कम कर देने पर खपरा बीटल को छोड़कर किसी भी अन्य कीट का आक्रमण नहीं होता। खपरा बीटल (टोगोडरमा ग्रेनेरियम) कीट 2 प्रतिशत नमी तक भी जिन्दा रहता है, बड़े गोदामों में नमी रोधी संयंत्र लगाना चाहिए। जिससे बरसात में भी नमी नहीं बढ़े। उपलब्ध आक्सीजन- अनाज वायुरोधी भंडारगृह में रखना चाहिए। बीज को जीवित रखने के लिए केवल 1 प्रतिशत आक्सीजन की आवश्यकता होती है तथा कीटों को भी श्वसन हेतु आक्सीजन की आवश्यकता होती है। खपरा बीटल 16.8 प्रतिशत से कम आक्सीजन होने पर आक्रमण नहीं करता है। अर्थात् भंडारण में आक्सीजन कम करके कीड़ों की रोकथाम की जा सकती है। आक्सीजन का प्रसार होने पर कीट अधिक लगते है। तापक्रम- नमी की तरह कीटों के विकास के लिए एक निश्चित तापक्रम की आवश्यकता होती है जो कीटों के अधिक विकास के लिए 28 से 32 डिग्री सेन्टीग्रेड होती है।

### निवेदन

**समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.**

**समस्या-समाधान**

**कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल ( म.प्र. ) फोन-0755-4248100,2554864**

## किसान भाइयों को कृषि सलाह

**गेहूं :** कई स्थानों पर गेहूं को खड़ी फसल में ज्यादा नमी के कारण पीलापन दिखाई दे रहा है अतः किसान भाइयों को सलाह है कि NPK 19:19:19 पानी में घुलनशील खाद की 100 ग्राम मात्रा प्रति पम्प की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें। पूर्व में बोई गई गेहूं फसल में विभिन्न क्रांतिक अवस्थाओं में सिंचाई करें तथा सिंचाई के बाद शेष बची यूरिया का छिड़काव अवश्य करें। यूरिया का छिड़काव करते समय इस बात का ध्यान रखें की पत्तियों पर पानी न हो तथा यूरिया चिपक न जाये। चूहों की रोकथाम करने के लिए जिंक फास्फाइड दवा को कोई भी खाद्य पदार्थ में अच्छी प्रकार से मिला डाल दें।

**चना :** चने की फसल में फली आना प्रारंभ हो गई हैं तो इस स्थिति में सिंचाई न करें, चने की फसल में दूसरी सिंचाई 50% फली बनने की अवस्था में करें। चने की फसल में फली आना प्रारंभ हो गए हैं, फली बनने के समय फली छेदक कीट के आक्रमण की ज्यादा संभावना होती है अतः रोकथाम हेतु इन्डोक्साकार्ब 14.5% 58 @ 12-15ml/ पंप की दर से स्प्रे करें। चने की फसल में प्रारम्भिक कीट नियंत्रण हेतु एकीकृत कीट प्रबंधन का प्रयोग जैसे फेरोमोन प्रपंच, प्रकाश प्रपंच या खेतों में पक्षियों के बैठने हेतु खूटी लगाना लाभकारी होता है।

**सरसों :** पिछले कुछ दिनों से बादल रहने के कारण सरसों की फसल में चूर्णिल आसिता वीमारी के प्रकोप की संभावना बन रही है अतः फसल की सतत निगरानी करते रहें तथा अधिक प्रकोप होने पर 20 कि.ग्रा. गंधक चूर्ण का भुरकाव करें या 750 मि.ली. डाइनोकेप (केराथेन 30 एल.सी.) को पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। अल्टरनेरिया ब्लाइट, डाउनी मिल्ड्यू और लीफ स्पॉट के लिए लगातार निगरानी रखें, यदि कोई बीमारी दिखे तो मैनकोजेब 75% WP 2-5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। रस चूसने वाले कीटों के लिए लगातार निगरानी रखें, यदि संक्रमण दिखे तो थायोमेथोक्सम 5.0-7.5 ग्राम/पंप 0.35-0.5 ग्राम/लीटर का स्प्रे करें।

**आलू :** आलू फसल में कंद बन चुका है यह सिंचाई की क्रांतिक अवस्था है। अतः आवश्यकतानुसार सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। आलू में रसचूसक कीटों का प्रकोप देखा जा रहा हैं अतः सलाह है कि नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**आम :** आम के बाग में सिंचाई करना बंद करें। आम में मिलिबग को नियंत्रित करने के लिए तने में ग्रीस स्ट्रिप्स का उपयोग करें और फॉलिडॉल 250 ग्राम/पौधा की दर से मिट्टी में उपयोग करें। बेर के पौधों में फलों की अच्छी वृद्धि के लिए नाइट्रोजन धारी उर्वरक के रूप में यूरिया का छिड़काव करें।

**पशुपालन :** दलहनी चारा फसल जैसे बरसीम, लूसर्न आदि को सूखे चारे के साथ मिलाकर कुट्टी काटकर खिलायें। पशुओं को पौष्टिक हरा चारा खिलाने के लिए उसे फूल आने के पहले ही कटाई करें। पशुओं को ठंड से बचाने हेतु पक्के फर्श को धान की पुआल या कूड़े से आच्छादित करें जो थर्मल मल्व प्रदान करता है। सभी दुग्ध जानवरों को रात के दौरान विशेष रूप से संरक्षित और सुरक्षित मवेशी शेड में रखें। पशुशाला में पशुओं को मच्छरों एवं अन्य कीटों से बचाव हेतु गीला कूड़ा-कचरा जलाकर धुआँ करें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य

# दाल-चावल : प्रोटीन और ऊर्जायुक्त भोजन

## क्यों हमारा रोज़मर्रा का आरामदायक भोजन आज की प्रोटीन-दीवानगी से अधिक स्वास्थ्यवर्धक और समझदारी भरा हो सकता है

● डॉ. राघवेन्द्र साहू ● डॉ. चन्द्रहास साहू
दुग्ध विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, रायपुर
ercsahu2003@yahoo.com

आज के समय में प्रोटीन सबसे अधिक चर्चा में रहने वाला पोषक तत्व बन गया है। जिम की बातचीत से लेकर सुपरमार्केट की शेल्फ़ तक, यह सुर्ख़ियां, पैकेजिंग और सोशल मीडिया क्षेत्र पर छाया हुआ है। प्रोटीन पाउडर, बार, फ़ोर्टिफ़ाइड स्नैक्स, प्लांट-बेस्ड मीट और लैब-निर्मित विकल्प सब ताक़त, फिटनेस और दीर्घायु का वादा करते हैं, वह भी अक्सर ऊँची कीमत पर। लेकिन इसी शोर-शराबे के बीच, भारत के करोड़ों घर आज भी चुपचाप और निरंतर अपनी प्रोटीन ज़रूरतें एक ऐसे भोजन से पूरी कर रहे हैं, जो शायद ही कभी सुर्खियों में आता है- दाल और चावल। सरल, सस्ता और अत्यंत परिचित यह संयोजन पीढ़ियों से विभिन्न क्षेत्रों, ऋतुओं और सामाजिक-आर्थिक वर्गों को पोषण देता आ रहा है।

आधुनिक पोषण विज्ञान अब जिस तथ्य की पुष्टि कर रहा है, वह बेहद सरल है-दाल और चावल मिलकर एक उच्च गुणवत्ता वाला, पोषण की दृष्टि से पूर्ण पौध-आधारित प्रोटीन बनाते हैं। प्रोटीन ट्रेंड्स के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, भारतीय रसोई ने पोषण संतुलन की इस समस्या का समाधान खोज लिया था।

**दाल और चावल साथ में बेहतर क्यों**

चावल, जो कई पारंपरिक आहारों का मुख्य अनाज है, ऊर्जा का उत्कृष्ट स्रोत है, लेकिन इसकी अमीनो अम्ल संरचना असंतुलित होती है। इसके प्रोटीन में ग्लूटामिन, प्रोलिन, ल्यूसीन और एलैनिन की मात्रा अधिक होती है, जबकि लाइसिन, ट्रिप्टोफ़ैन, मेथियोनीन और हिस्टिडिन जैसे पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण अमीनो अम्ल सीमित मात्रा में पाए जाते हैं। यद्यपि चावल में विभिन्न प्रकार के अमीनो अम्ल मौजूद होते हैं- विशेष रूप से अंकुर (जर्म) में- फिर भी कम लाइसिन के कारण इसकी प्रोटीन गुणवत्ता सीमित रह जाती है।

इसके बावजूद, चावल से प्राप्त प्रोटीन आइसोलेट्स को अत्यंत पौष्टिक माना जाता है और उनकी गुणवत्ता केसिन तथा सोया प्रोटीन के समकक्ष पाई गई है। उच्च पाचन-क्षमता और कम एलर्जेनिक गुणों के कारण चावल प्रोटीन शिशुओं और वृद्धों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है और इसे पशु-आधारित प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण विकल्प माना जाता है। फिर भी, अकेला चावल आवश्यक अमीनो अम्लों की पूर्ति आदर्श रूप से नहीं कर पाता।

यहीं दालें इस पोषणीय कमी को प्रभावी ढंग से पूरा करती हैं। दालों में अनाजों की तुलना में लगभग दोगुनी मात्रा में प्रोटीन (लगभग 21-25 प्रतिशत) पाया जाता है और ये लाइसिन, फोलेट, आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम और जिंक से भरपूर होती हैं। यद्यपि दालों में मेथियोनीन और सिस्टीन जैसे सल्फ़र-युक्त अमीनो अम्ल सीमित होते हैं, फिर भी इनके प्रोटीन अंश-मुख्यतः ग्लोब्युलिन और एल्ब्यूमिन-लाइसिन, आर्जिनिन और एस्पार्टिक अम्ल से समृद्ध होते हैं। एल्ब्यूमिन, यद्यपि कम मात्रा में पाया जाता है, लेकिन इसकी घुलनशीलता बेहतर होती है, जिससे पकाने और पाचन के दौरान यह स्टार्च और जल के साथ बेहतर अंतःक्रिया कर पाता है।

यद्यपि दाल प्रोटीन की पाचन-क्षमता संरचनात्मक कठोरता और कुछ प्रतिपोषक तत्वों के कारण अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन जब इन्हें अनाज के साथ मिलाया जाता है तो कुल प्रोटीन उपयोगिता में सुधार होता है। चावल दालों में कमी वाले सल्फ़र-युक्त अमीनो अम्ल प्रदान करता है, जबकि दालें चावल की लाइसिन की कमी को पूरा करती हैं। इस प्रकार दोनों मिलकर एक संतुलित और पूर्ण अमीनो अम्ल प्रोफ़ाइल बनाते हैं, जो उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन के समकक्ष होती है।

पोषण विज्ञान में इस सिद्धांत को प्रोटीन पूरकता (Protein Complementation) कहा जाता है। भारतीय आहार में यह अवधारणा सदियों से सहज रूप से अपनाई जाती रही है। इसलिए दाल-चावल का यह स्थायी संयोजन संयोग नहीं, बल्कि अनुभव, संस्कृति और जैविक अनुकूलता से विकसित पोषणीय बुद्धिमत्ता का परिणाम है जो इसे विश्व के सबसे टिकाऊ और पोषण-कुशल पौध-आधारित भोजनों में से एक बनाता है। **(क्रमशः)**

# केसर : महकती औषधि

यूं तो केसर का उत्पत्ति स्थान दक्षिणी यूरोप का स्पेन देश है, जहां से केसर मुम्बई आई है और मुम्बई से पूरे भारत के बाजारों में पहुंचती है, लेकिन स्पेन के अलावा केसर की पैदावार ईरान, फ्रांस, इटली, ग्रीस, तुर्की, फारस और चीन में भी की जाती है। भारत में, कश्मीर के पम्पूर नामक स्थान पर और जम्मू के किश्तवाड़ नामक स्थान पर केसर की खेती की जाती है।

**केसर का उपयोग** : आयुर्वेदिक नुस्खों में, खाद्य व्यंजनों में और देव पूजा आदि में तो इसका उपयोग होता ही था पर अब पान

मसालों और गुटकों में भी इसका उपयोग होने लगा है। केसर बहुत ही उपयोगी गुणों से युक्त होती है। यह उत्तेजक, वाजीकारक, यौनशक्ति बनाए रखने वाली होती है। कामोत्तेजक, त्रिदोष नाशक, रुचिकर, मासिक धर्म साफ लाने वाली, गर्भाशय व योनि संकोचन जैसे रोगों को भी दूर करती है। त्वचा का रंग उज्ज्वल करने वाली, रक्तशोधक, धातु पौष्टिक, प्रदर और निम्न रक्तचाप को ठीक करने वाली, कफ नाशक, मन को प्रसन्न करने वाली, स्तन (दूध) वर्द्धक, मस्तिष्क को बल देने वाली, हृदय और रक्त के लिए हितकारी, तथा खाद्य पदार्थ और पेय (जैसे दूध) को रंगीन और सुगन्धित करने वाली होती है।

# स्वास्थ्यवर्धक है श्रीफल

नारियल एवं इसका पानी दोनों ही काफी गुणकारी हैं तथा औषधि के रूप में घरेलू उपयोग में लाए जाते हैं। नारियल का पानी दूध की तरह ही एक पूर्ण आहार है। विटामिन के रूप में इसमें 'ए, बी, सी' विटामिन साथ में प्रोटीन, कैल्शियम एवं लौह तत्व पाए जाते हैं। ये सभी तत्व शरीर के विकास हेतु अत्यंत लाभदायक माने जाते हैं। यदि नारियल का और इसके पानी का उचित समय पर सही उपयोग किया जाए तो घरेलू प्रकार की कई छोटी-छोटी तकलीफों पर काबू किया जा सकता है।

● **हिचकी** –कच्चे नारियल का पानी पीने से हिचकी खत्म होती है। साथ ही उल्टी, पेट की गैस, पेटदर्द में भी लाभ होता है।

● **दमा** – नारियल की जटा को जलाकर और पावडर (राख) को शहद में मिलाकर दिन में तीन-चार बार चाटने से अच्छा फायदा होता है।

● **याददाश्त** – नारियल की गिरी में बादाम, अखरोट एवं मिश्री मिलाकर सेवन करने से स्मृति शक्ति में वृद्धि होती है।

● **नकसीर** – नाक से खून निकलने पर कच्चे नारियल का पानी नियमित रूप से पीना चाहिए। साथ ही खाली पेट नारियल के सेवन से भी रक्त का बहाव रुक जाता है।

● **मुहाँसे** – नारियल के पानी में खीरे का रस मिलाकर सुबह-शाम नियमित रूप से लगाने से चेहरे के दाग मिटते हैं। चेहरा सुंदर एवं चमकदार हो जाता है। नारियल के तेल में नींबू का रस अथवा ग्लिसरीन मिलाकर चेहरे पर लेप करने से भी मुहाँसे मिटते हैं।

● **अनिद्रा** – रात के भोजन पश्चात नियमित रूप से आधा गिलास नारियल पानी पीना चाहिए। इससे नींद अच्छी आती है।

● **सिरदर्द** – नारियल तेल में बादाम को मिलाकर तथा बारीक पीसकर सिर पर लेप लगाना चाहिए। इससे सिरदर्द में शीघ्र लाभ होता है।

● **रूसी** – नारियल के तेल में नींबू का रस मिलाकर बालों में लगाने से रूसी एवं खुश्की से छुटकारा मिलता है।

● **गर्भावस्था में** – सुबह नियमित रूप से 50 ग्राम नारियल की गिरी को चबाने से गर्भवती महिला को स्वास्थ्य में तो लाभ होता ही है। साथ ही गर्भस्थ बालक भी गौरवर्ण का एवं हृष्ट-पुष्ट होता है।

● **पेट के कीड़े** – पेट में कीड़े होने पर सुबह नाश्ते के समय एक चम्मच पिसा हुआ नारियल का सेवन करने से पेट के कृमि शीघ्र ही मर जाते है।

## पाक्षिक पंचांग

**2 से 15 मार्च 2026 तक**
**विक्रम संवत् 2082**
**फाल्गुन शुक्ल 14 से चैत्र कृष्ण 11 तक**

| दि. | माह | वार | | तिथि | त्यौहार |
|---|---|---|---|---|---|
| 02 | मार्च | सोम | फाल्गुन शुक्ल | 14 | होलिका दहन |
| 03 | मार्च | मंगल | ---------- | 15 | होली उत्सव, चंद्रग्रहण |
| 04 | मार्च | बुध | चैत्र कृष्ण | 1 | बसंतोत्सव |
| 05 | मार्च | गुरु | ---------- | 2 | भाई दोज |
| 06 | मार्च | शुक्र | ---------- | 3 | गणेश चतुर्थी व्रत |
| 07 | मार्च | शनि | ---------- | 4 | |
| 08 | मार्च | रवि | ---------- | 5 | रंग पंचमी |
| 09 | मार्च | सोम | ---------- | 6 | एकनाथ छठ |
| 10 | मार्च | मंगल | ---------- | 7 | भानु सप्तमी |
| 11 | मार्च | बुध | ---------- | 8 | शीतलाष्टमी |
| 12 | मार्च | गुरु | ---------- | 9 | |
| 13 | मार्च | शुक्र | ---------- | 10 | |
| 14 | मार्च | शनि | ---------- | 11 | खरमास प्रारंभ |
| 15 | मार्च | रवि | ---------- | 11 | पापमोचनी एकादशी |

# कृषि महाविद्यालय में कृषक प्रशिक्षण एवं सब्जी बीज वितरण

**रायपुर।** कृषि महाविद्यालय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के सब्जी विज्ञान विभाग में अखिल भारतीय समन्वित सब्जी अनुसंधान परियोजना के अनुसूचित जनजाति उप योजना (कोंडागांव) एवं अनुसूचित जाति उप योजना (जांजगीर चांपा) के अंतर्गत लाभान्वित कृषकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं सब्जी बीज वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, डॉ. गिरीश चंदेल, निदेशक विस्तार सेवाएं, डॉ. एस.एस. टुटेजा, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, रायपुर, डॉ. आरती गुहे का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत करते हुए हुए अखिल भारतीय समन्वित सब्जी अनुसंधान परियोजना के प्रमुख, डॉ. धनंजय शर्मा ने बताया कि जांजगीर-चांपा (एसएसपी) एवं कोण्डागांव (टीएसपी) क्षेत्र से आए हुए किसानों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं आय वृद्धि के उद्देश्य से भिंडी, बैंगन, बरबटी सहित विभिन्न सब्जियों के उन्नत बीज वितरित किए जाएंगे तथा उन्नत उत्पादन तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मुख्य अतिथि डॉ. गिरीश चंदेल ने किसानों से कहा कि हरी सब्जियों के नियमित सेवन से पोषण की कमी से होने वाले रोगों में कमी लाई जा सकती है। उन्होंने किसानों को प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने गांवों में अन्य किसानों को भी प्रशिक्षित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जब तक गांव विकसित नहीं होंगे, तब तक राज्य का समग्र विकास संभव नहीं है।

डॉ. एस.एस. टुटेजा ने किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से सब्जी उत्पादन अपनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ. आरती गुहे अपने उद्बोधन में कहा कि सब्जियां पोषण से भरपूर होती हैं, परंतु गुणवत्तायुक्त बीज का चयन अत्यंत आवश्यक है। किसानों को अपनी पोषण बाड़ी विकसित करने तथा अतिरिक्त उत्पादन को बाजार में बेचकर आय बढ़ाने की सलाह दी गई।

# जशपुर की अमराइयों में बौरों की बहार

**रायपुर।** जशपुर जिले की अमराइयों में इन दिनों आम के बौरों की सुगंध वातावरण को महका रही है। इस वर्ष आम के वृक्षों पर मंजरियाँ सघन एवं स्वस्थ दिखाई दे रही हैं, जिससे किसानों में बेहतर उत्पादन की उम्मीद जगी है। दशहरी, लंगड़ा, चौसा एवं आम्रपाली जैसी आम की प्रमुख प्रजातियाँ फूलों से आच्छादित हैं। वर्तमान में लगभग 5 हजार 410 हेक्टेयर क्षेत्र में आम की खेती की जा रही है।

सहायक संचालक उद्यान ने बताया कि अनुकूल मौसम एवं वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाने पर उत्पादन में 20 से 30 प्रतिशत तक वृद्धि संभव है। जशपुर का आम अपनी गुणवत्ता एवं मिठास के कारण अन्य राज्यों में भी भेजा जाता है। उद्यानिकी विभाग ने किसानों को बौर अवस्था में सिंचाई रोकने, फूल खिलने पर कीटनाशक का छिड़काव न करने तथा कीट-रोग नियंत्रण हेतु आवश्यक दवाओं के उपयोग की सलाह दी है। मैंगो हॉपर, पाउड्री मिल्डियू एवं एंथ्राकनोज नियंत्रण के लिए समयानुसार उपचार करने को कहा गया है।

# ग्राफ्टेड बैंगन से 16 लाख रूपए की आमदनी

**रायपुर।** किसान वैज्ञानिक पद्धति, उन्नत बीज और सही मार्गदर्शन के साथ खेती करें, तो कम भूमि में भी अधिक उत्पादन और बेहतर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसी कड़ी में मुंगेली जिले के पथरिया विकासखंड के ग्राम करही के किसान चिंतामणि बंजारे ने नवाचार और आधुनिक तकनीक को अपनाकर खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाया है। उन्होंने परंपरागत सब्जी खेती से आगे बढ़ते हुए उद्यानिकी विभाग के मार्गदर्शन में 10 एकड़ क्षेत्र में ग्राफ्टेड बैंगन की खेती कर लगभग 1100 क्विंटल उत्पादन प्राप्त हुआ। इस उत्पादन से उन्हें करीब 16 लाख रुपये की आमदनी हुई है।

कृषक चिंतामणी ने बताया कि सामान्य फसल की तुलना में ग्राफ्टेड बैंगन में लागत अपेक्षाकृत कम आती है, जबकि उत्पादन अधिक मिलता है, परिणामस्वरूप आय दो से तीन गुना तक बढ़ जाती है। ग्राफ्टेड बैंगन की विशेषता इसकी मजबूत जड़ प्रणाली, रोग प्रतिरोधक क्षमता और अधिक उत्पादन है। पहले वे सामान्य सब्जियों की खेती करते थे, जिसमें लाभ सीमित और जोखिम अधिक था। किंतु उद्यान विभाग के प्रोत्साहन, तकनीकी सलाह और उन्नत पौध सामग्री के उपयोग ने उनकी खेती की दिशा ही बदल दी। उचित सिंचाई प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग और नियमित देखभाल से फसल की गुणवत्ता बेहतर रही, जिससे बाजार में उन्हें अच्छा मूल्य प्राप्त हुआ। आज वे आर्थिक रूप से सशक्त हुए हैं, बल्कि अन्य किसानों को भी उन्नत तकनीक अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। ग्राफ्टेड बैंगन की खेती ने उनके परिवार की आय बढ़ाने के साथ-साथ गांव में आधुनिक कृषि की नई सोच को भी प्रोत्साहित किया है।

**कृषक जगत जिला प्रतिनिधि**

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
**उत्तम कुमार देशमुख**
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

**कृषक जगत जिला प्रतिनिधि**

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
**बलभद्र शर्मा**
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

**छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ**

**व्यक्तिगत क्लासीफाइड**

**विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-**
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

**विज्ञापन दर** - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

**डिस्प्ले क्लासीफाइड**

**विज्ञापन दर** : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
**साइज** : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

**कैटेगरीज**- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-
⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
**डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें :** .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

*कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम*
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952
सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

### एरीज ग्रुप की कंपनी

# अमारक केमिकल्स ने दुबई में सल्फर प्लांट शुरू किया

**नई दिल्ली (कृषक जगत)।** एरीज ग्रुप की सहयोगी कंपनी अमारक केमिकल्स ने दुबई के जेबेल अली में अपने पूर्णत: आटोमेटिक सल्फर प्लांट का संचालन प्रारम्भ कर दिया है। नए संयंत्र की वार्षिक स्थापित क्षमता 60,000 मीट्रिक टन है, जिसमें सल्फर बेंटोनाइट तथा अन्य वैल्यू एडेड सल्फर-आधारित कृषि इनपुट्स का निर्माण किया जाएगा। यह इकाई अंतरराष्ट्रीय बाजारों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्थापित की गई है, विशेषकर उन क्षेत्रों के लिए जहां मिट्टी में सल्फर की कमी पाई जाती है।

कारखाने का उद्घाटन भारत के महावाणिज्य दूतावास, दुबई के कौंसुल श्री बी. जी. कृष्णन द्वारा किया गया। इस अवसर पर जाफ़ज़ा के सेल्स निदेशक सऊद अलअवाधी तथा एरीज ग्रुप के निदेशक मंडल के सदस्य उपस्थित रहे।

अमारक वर्तमान में दक्षिण अमेरिका और एशिया-प्रशांत क्षेत्र सहित 13 देशों में निर्यात करता है, जिनमें ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड शामिल हैं। एरीज ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. राहुल मीरचंदानी ने कहा कि जाफ़ज़ा में यह निवेश कृषि इनपुट्स के क्षेत्र में विश्वस्तरीय विनिर्माण क्षमता विकसित करने की समूह की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है। उद्घाटन समारोह में सात देशों से आए ग्राहकों ने संयंत्र का दौरा किया और इसकी ऑटोमेशन प्रणालियों का अवलोकन किया।

# आईपीएल को कांडला बंदरगाह पर सम्मान

**नई दिल्ली (कृषक जगत)।** उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख कंपनी इंडियन पोटाश लि. (आईपीएल) को अंतरराष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2026 के अवसर पर कांडला बंदरगाह और विशाखापत्तनम बंदरगाह पर उत्कृष्ट आयात प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया है। आईपीएल को वित्त वर्ष 2025-26 के लिए गुजरात के कांडला बंदरगाह पर 'टॉप इम्पोर्टर' का पुरस्कार दिया गया।

'टॉप इम्पोर्टर' पुरस्कार गांधीधाम स्थित इफको ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में दिया गया। यह पुरस्कार कांडला के सीमा शुल्क आयुक्त श्री नितिन सैनी ने मुख्य अतिथि पद्मश्री सम्मानित श्री नारायण जोशी (कच्छ) की उपस्थिति में प्रदान किया। आईपीएल की ओर से गुजरात (कच्छ) के सेल्स ऑफिसर श्री जतिन शाह ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

आईपीएल के प्रबंध निदेशक डॉ. पी.एस. गहलौत ने कहा 'ये सम्मान हमारे आयात कार्यों में उत्कृष्टता, नियमों के पालन और विश्वसनीयता पर हमारे मजबूत फोकस को दर्शाते हैं। यह देशभर के बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स केंद्रों पर काम कर रही हमारी टीम की मेहनत का परिणाम है।'

# जेके टायर ने 'श्रेष्ठ प्लस' ट्रैक्टर टायर लॉन्च किया

**हिसार (कृषक जगत)।** जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने आधुनिक कृषि की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपना नया प्रीमियम ट्रैक्टर टायर 'श्रेष्ठ प्लस' लॉन्च किया है। कंपनी का कहना है कि यह टायर बढ़ती कृषि यंत्रीकरण, अधिक हॉर्सपावर वाले ट्रैक्टरों के उपयोग और विभिन्न प्रकार की मिट्टी में लंबे समय तक काम करने की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है।

कंपनी के अनुसार, 'श्रेष्ठ प्लस' को बेहतर ट्रैक्शन, स्थिरता और लंबी उम्र देने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है, ताकि किसान और कृषि कार्य से जुड़े ऑपरेटर खेत और सड़क—दोनों परिस्थितियों में बेहतर कार्यक्षमता प्राप्त कर सकें।

जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. के डायरेक्टर (सेल्स एंड मार्केटिंग) श्री श्रीनिवासु अल्लाफन ने कहा कि भारतीय कृषि तेजी से यंत्रीकरण की ओर बढ़ रही है और किसान अधिक क्षमता वाले ट्रैक्टर अपना रहे हैं। ऐसे में कंपनी का ध्यान उच्च प्रदर्शन

वाले समाधान उपलब्ध कराने पर है। जेके टायर का कहना है कि उसका कृषि टायर पोर्टफोलियो विभिन्न प्रकार की मिट्टी, ट्रैक्टर श्रेणियों और कृषि कार्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, और 'श्रेष्ठ प्लस' इसी श्रृंखला को और मजबूत करता है।

# पारादीप फॉस्फेट्स को S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 में स्थान

**बेंगलुरु (कृषक जगत)।** पारादीप फॉस्फेट्स लि. (पीपीएल) को S&P Global की S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 में सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक सदस्य के रूप में चुना गया है। साथ ही, वर्ष 2026 में ईयरबुक में स्थान पाने वाली यह भारत की एकमात्र उर्वरक कंपनी बनी है।

श्री एन. सुरेश कृष्णन

श्री राजीव नांबियार

S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 उन कंपनियों को मान्यता देती है, जो अपने-अपने उद्योगों में पर्यावरण, सामाजिक और सुशासन (ESG) मानकों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करती हैं। इस वर्ष 2025 के कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट (CSA) के तहत 9,200 से अधिक कंपनियों का मूल्यांकन किया गया, जिनमें से 59 उद्योगों की केवल 848 कंपनियां 2026 संस्करण में स्थान बना सकीं।

पीपीएल के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री एन. सुरेश कृष्णन ने कहा, 'यह सम्मान एक जिम्मेदार और भविष्य के लिए तैयार उद्यम के निर्माण की हमारी दीर्घकालिक दृष्टि को दर्शाता है। फॉस्फेटिक उर्वरक उद्योग में अग्रणी कंपनी के रूप में हम सस्टेनेबिलिटी को भारत की कृषि प्रगति और राष्ट्रीय विकास का अभिन्न हिस्सा मानते हैं।'

कंपनी के अध्यक्ष एवं मुख्य परिचालन अधिकारी श्री राजीव नांबियार ने कहा, 'पीपीएल में सस्टेनेबिलिटी हमारी पूरी वैल्यू चेन में समाहित है-चाहे वह सुशासन ढांचे को मजबूत करना हो, परिचालन दक्षता बढ़ाना हो या जिम्मेदार सोर्सिंग और विनिर्माण उत्कृष्टता को आगे बढ़ाना हो।'

# आईटीसी कृषि को एआई के जरिए दे रही नया रूप

**नई दिल्ली (कृषक जगत)।** उन्नत डिजिटल तकनीकों के माध्यम से छोटे और सीमांत किसानों को हाइपर-पर्सनलाइज्ड समाधान उपलब्ध कराने के बाद, आईटीसी अब अपने एआई नवाचारों का विस्तार एफपीओ, जैविक खेती किसानों और ग्रामीण समुदायों तक करने जा रही है। नई जेनरेटिव एआई एप्लीकेशन और एजेंटिक एआई क्षमताओं के माध्यम से कंपनी अपने ITCMAARS 'फिजिटल' इकोसिस्टम को एक सशक्त, कनेक्टेड और इंटेलिजेंस-ड्रिवन एग्री-स्टैक में परिवर्तित कर रही है। यह पहल आईटीसी के चेयरमैन श्री संजीव पूरी की 'नेक्स्ट जेन एग्रीकल्चर' रणनीति का अहम हिस्सा है। आईटीसी का लक्ष्य ITCMAARS प्लेटफॉर्म के माध्यम से 1 करोड़ किसानों तक पहुंच बनाना है, जिससे ग्रामीण विकास को गति मिले।

**एफपीओ और जैविक खेती के लिए एआई समाधान**- ITCMAARS एक सुपरएप के रूप में डिजिटल तकनीक और जमीनी मानव संपर्क का संयोजन है, जिसमें एफपीओ को एंकर की भूमिका दी गई है। एफपीओ के लिए अलग कस्टमाइज्ड ऐप भी उपलब्ध है। अब कंपनी एफपीओ संचालन की दक्षता बढ़ाने और उन्हें स्केल-अप करने के लिए एआई आधारित समाधान जोड़ने जा रही है।

**आईटीसी एग्री बिजनेस के डिविजनल चीफ एग्जीक्यूटिव श्री एस. गणेश कुमार** ने कहा कि कंपनी का उद्देश्य नवीनतम तकनीकों तक छोटे किसानों की पहुंच को लोकतांत्रिक बनाना है, ताकि वे जलवायु परिवर्तन, फसल प्रबंधन और बाजार पहुंच जैसी चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट सकें।

**एआई इम्पैक्ट समिट में प्रमुख उदाहरण**- नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के दौरान ITCMAARS को जमीनी स्तर पर एआई के प्रभावी उपयोग के उदाहरण के रूप में देखा जा रहा है। यह पहल 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भारतीय एआई सोच के अनुरूप है।

**22 लाख किसान जुड़े, आय में 25% तक वृद्धि**- 2022 में शुरू हुआ ITCMAARS अब फुल-स्टैक 'फार्मिंग ऐज़ अ सर्विस' समाधान बन चुका है। 11 राज्यों में 22 लाख से अधिक किसान और 2100 से ज्यादा एफपीओ इससे जुड़े हैं। पायलट आकलनों के अनुसार- उर्वरक उपयोग में 10-15% कमी, फसल उत्पादकता में 15-20% वृद्धि, किसानों की आय में लगभग 25% इजाफा।

**'कृषि मित्र' बना किसानों का एआई सहायक**- इस इकोसिस्टम का मुख्य आधार 'कृषि मित्र' है, जो माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से विकसित एआई आधारित एग्री-को-पायलट है। 8 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध।

**'क्रॉप कैलेंडर' और 'क्रॉप डॉक्टर' से सटीक सलाह**- ITCMAARS पर उपलब्ध 'क्रॉप कैलेंडर' 53 फसलों के लिए वैज्ञानिक फसल योजना बनाने में मदद करता है। वहीं 'क्रॉप डॉक्टर' एआई आधारित इमेज एनालिटिक्स टूल है, जो 70 फसलों में रोग पहचान कर त्वरित उपचार सलाह देता है। इस फीचर का 3 लाख से अधिक बार उपयोग किया जा चुका है।

- **आईटीसी एफपीओ, जैविक किसानों और ग्रामीण समुदायों तक एआई समाधान का विस्तार करेगी**
- **ITCMAARS अब उन्नत एआई तकनीकों से लैस फुल-स्टैक 'फार्मिंग ऐज़ अ सर्विस' (FaaS) प्लेटफॉर्म बना**
- **11 राज्यों में 22 लाख से अधिक किसान और 2100 से ज्यादा एफपीओ लाभान्वित**
- **उर्वरक उपयोग में 10-15 प्रतिशत कमी, पैदावार में 15-20 प्रतिशत वृद्धि, किसानों की आय में लगभग 25 प्रतिशत इजाफा**

कृषक जगत
"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2026-28 RNI No.-CHHHIN/2002/10910
Post Bag No. 37,BHOPAL-462011
रायपुर, 2 मार्च 2026, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार


# इफको का नैनो उर्वरक उपयोग एवं कृषि अधिकारी प्रशिक्षण

**कोंडागांव।** इफको द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, कोंडागांव में इफको नैनो उर्वरक अभियान के अंतर्गत कृषि अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, श्री डी.के. कश्यप (एस.डी.ओ., कृषि विभाग), डॉ बी.के. ठाकुर (शस्य विज्ञान, केवीके), डॉ. चौधरी (मृदा विज्ञान, केवीके) रहें तथा विशिष्ट अतिथि के रुप में इफको राज्य कार्यालय से राज्य विपणन प्रबंधक श्री आर. के. एस. राठौर एवं उप महाप्रबंधक श्री राजेश गोले विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन इफको के बस्तर क्षेत्र प्रतिनिधि श्री शिवशंकर मिश्रा द्वारा किया गया। इस अवसर पर 72 ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी एवं वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों ने सहभागिता की। सत्र के दौरान इफको राज्य विपणन प्रबंधक द्वारा नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कॉपर, बायो डीकम्पोजर एवं एनपीके कंसोर्टिया की अनुशंसित मात्रा, छिड़काव समय, फसलवार उपयोग तथा अपेक्षित परिणामों पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया। इन उत्पादों के संतुलित प्रयोग से पौधों में पोषक तत्वों की उपलब्धता बेहतर होती है, मिट्टी की सेहत सुधरती है तथा उत्पादन लागत नियंत्रित रहती है।

# कृभको का समिति अंगीकरण कार्यक्रम

**जांगजीर-चांपा।** कृभको छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा के राज्य विपणन प्रबंधक श्री आशुतोष चंद्राकार के निर्देशन, में श्री मदन मोहन बाजपेई, कनिष्ठ क्षेत्रीय प्रतिनिधि जिला जांजगीर-चांपा द्वारा गतदिनों समिति अंगीकरण कार्यक्रम बृहत्ताकार सहकारी समिति, घुठिया में किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि अमित साहू, नोडल अधिकारी जिला सहकारी केंद्रीय बैंक जांजगीर-चांपा, भागवत साहू कृभको जी.वी.टी. क्लार्डिनेटर छतीसगढ, भानू कौशिक सुपरवाइज़र जिला सहकारी बैंक, शाखा जांजगीर एवं सुखसागर कश्यप प्रबंधक बृहत्ताकार सहकारी समिति घुठिया सहित लगभग 60 किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत के पश्चात कार्यक्रम के बारे मे जानकारी दी गयी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री चंद्राकार ने बताया कि छ.ग. की मृदा मे जीवांस का अनुपात अत्यधिक कम है जिससे मृदा की उत्पादकता काफी प्रभावित हो रही है इसके पूर्ति के लिए जैविक उर्वरको, कम्पोस्ट एवं राइज़ोसुपर का प्रयोग करने का सुझाव दिया। नोडल अधिकारी साहू ने बताया कि सहकारी समिति सहकारिता का आधार होती है जिसके माध्यम से सभी ग्रामीण किसान जुड़े रहते और सरकार की योजनाओं से लाभांवित होते है। श्री बाजपेई ने आभार व्यक्त किया।

# डॉ. दीक्षित लाइफटाइम एकेडमिक लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित

**रायपुर।** डॉ. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर को कृषि एवं संबद्ध विज्ञान के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट, दीर्घकालिक एवं प्रभावशाली योगदान के लिए लाइफटाइम एकेडमिक लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान गत 21 फरवरी को चंडीगढ़ में आयोजित 7वें ग्लोबल कॉन्फ्रेंस AGRIM-MET 2026 के समापन समारोह में प्रदान किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन एग्री मीट फाउंडेशन भारत द्वारा किया गया था। डॉ. दीक्षित ने इस वैश्विक सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागिता की। उनका यह सम्मान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कृषि अनुसंधान, शैक्षणिक नेतृत्व तथा संस्थागत विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान का प्रतीक है। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ.धीर सिंह, निदेशक-सह-कुलपति,राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल थे। इस अवसर पर पंजाब क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित रहे। सम्मेलन में लगभग 400 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।